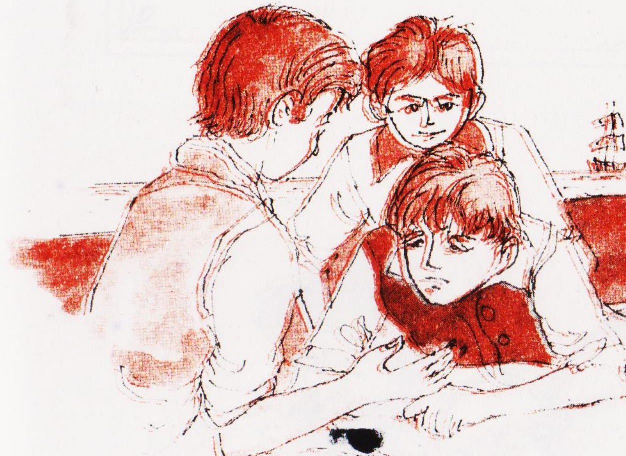
मूंगे का द्वीप



आर. एम. बेलेण्टाइन के प्रसिद्ध उपन्यास 'कोरल आइलैंड'
का सरल हिन्दी रूपान्तर

मूंगे का द्वीप



आर. एम. वेलेण्टाइन के प्रसिद्ध उपन्यास
'CORAL ISLAND' का सरल हिन्दी रूपानतर
रूपान्तरकार : श्रीकान्त व्यास

[redacted]

ISBN : 9788174830203
संस्करण : 2019 ©शिक्षा भारती
MOONGE KA DWEEP (Novel)
by R.M. Valentine
(Abridged Hindi edition of *Coral Island*)
मुद्रक : जी. एस. ऑफसेट दिल्ली

शिक्षा भारती
1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट-दिल्ली-110006

मूंगे का द्वीप





मूंगे का द्वीप

बचपन से ही मुझे जहाज़ में घूमने का बड़ा शौक था। मेरे पिता एक जहाज़ के कप्तान थे। मेरे दादा भी जहाज में काम किया करते थे। इस तरह हमारे परिवार में यह शौक बड़ा पुराना था।

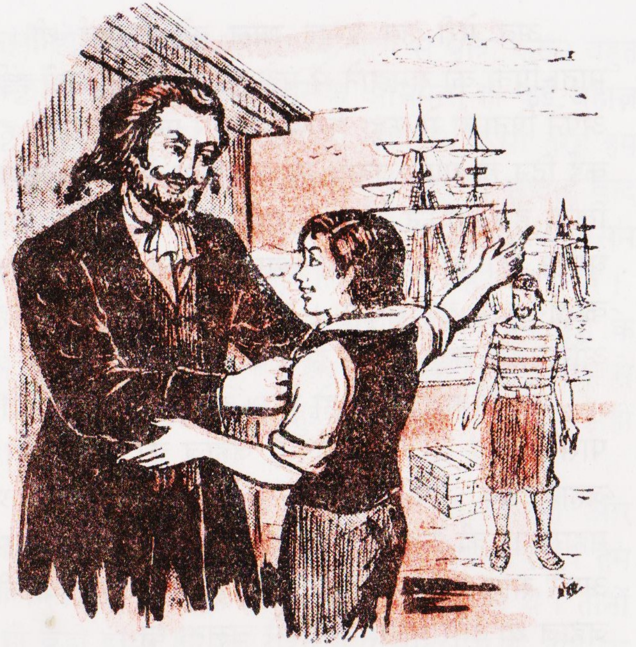
बचपन में मैं अक्सर अपने गांव के पास के जंगलों और पहाड़ों में घूमता रहता था और सारी दुनिया में घूमने की योजना बनाया करता था। मैं अक्सर अपने पिताजी से कहता था, "बाबा, मुझे भी अपने साथ जहाज़ में ले जाया कीजिए। मैं भी जहाज़ चलाना सीखूंगा और देश-विदेश की यात्रा करूंगा।"

अन्त में मैं जब कुछ बड़ा हुआ तब एक दिन पिताजी ने कहा, "बेटा राल्फ, अब तुम बड़े हो गए। तुम अक्सर मुझसे जहाज़ पर चलने के लिए कहते रहे हो। मैं भी चाहता हूं कि तुम एक अच्छे जहाज़ी बनो और समुद्र से प्रेम करना सीखो। मेरा जहाज़ तो बहुत दूर-दूर तक जाता है, इसलिए अभी मैं तुम्हें अपने जहाज़ पर नहीं ले जाऊंगा, लेकिन एक-दूसरे जहाज़ में तुम्हारा इन्तजाम कर दूंगा।"

यह सुनकर मेरी खुशी की सीमा नहीं रही। मैंने तुरन्त यात्रा की तैयारी की। पिताजी मुझे बन्दरगाह में ले गए। उन्होंने अपने मित्रों से मेरा परिचय करवाया। फिर एक नौसिखिए जहाज़ी की तरह मुझे एक ऐसे जहाज़ पर रखवा दिया जो किनारे के आस-पास ही चला करता था।

इस जहाज़ पर काम करते समय मेरी कई जहाज़ियों से मुलाकात हुई, जो दुनिया-भर में घूम चुके थे। वे लोग अक्सर ख़ाली समय में अपनी यात्राओं के किस्से सुनाया करते थे। मैं इन किस्सों को बड़े ध्यान से सुनता था। उनकी साहसपूर्ण यात्राओं के बारे में सुनकर मेरा मन बेकाबू हो जाता था। मैं भी चाहता था कि मुझे भी दूर-दूर के देशों को देखने का मौका मिले। सबसे पहले मैं प्रशान्त महासागर के मूंगे के द्वीपों की यात्रा करना चाहता था। मूंगे के द्वीपों के बारे में ये जहाजी अक्सर बातें किया करते थे। इनका कहना था कि ऐसे सुन्दर द्वीप संसार में और कहीं नहीं हैं।

मैंने अपने साथी जहाजियों से मूंगे के द्वीपों के बारे में विस्तार से पूछना शुरू किया। उन लोगों ने मुझे बताया कि इन द्वीपों को मूंगा नाम के कीड़ों ने बनाया है, जो बहुत छोटे होते हैं और समुद्र में पाए जाते हैं। संसार में कई समुद्रों में मूंगे के द्वीप मिलते हैं, लेकिन दक्षिणी सागर में पाए जानेवाले मूंगे के द्वीप काफी बड़े और बहुत सुन्दर हैं। वहां की ज़मीन बड़ी उपजाऊ है। साल-भर वहां बहुत अच्छा मौसम रहता है। वहां कई तरह के पेड़ पाए जाते हैं,



जिनमें खूब फल लगते हैं। इनमें नारियल के पेड़ सबसे ज्यादा हैं।

जहाज़ियों ने मुझे बताया कि इतने सुन्दर टापुओं में भी जो लोग रहते हैं, वे बड़े खूंखार और जंगली किस्म के हैं। अब तो धीरे-धीरे कुछ द्वीपों में सभ्यता का प्रचार होने लगा है, लेकिन कुछ में अब भी बर्बर जंगली जाति के लोग पाए जाते हैं।

मूंगे के द्वीपों की ये कहानियां इतनी दिलचस्प होती थीं कि मैंने तय कर लिया कि मैं मौका मिलते ही 15वें साल में इन द्वीपों की यात्रा करूंगा।

अब मेरी उम्र पन्द्रह साल की हो गई थी। अपने माता-पिता को समझाने में मुझे कोई कठिनाई नहीं हुई। मैंने अपने पिताजी से कहा, "बाबा, किनारे पर यात्रा करते हुए मुझे कई दिन हो गए। जहाज का काम भी मैंने बहुत कुछ सीख लिया है। लेकिन अगर मैं इसी तरह किनारे के आसपास घूमता रहा तो कभी भी आपकी तरह एक बड़ा जहाज़ी कप्तान नहीं बन सकूंगा। अब मैं दूर-दूर घूमना चाहता हूं और सबसे पहले मूंगे के द्वीपों को देखना चाहता हूं।"

मेरे पिताजी राजी हो गए। वे मुझे अपने एक दोस्त के पास ले गए, जो एक व्यापारी जहाज़ का कप्तान था। उस जहाज़ का नाम था 'ऐरो' (तीर)। यह जहाज प्रशान्त महासागर की यात्रा करनेवाला था। जहाज़ का कप्तान मुझे अपने साथ रखने के लिए राज़ी हो गया। यह काफी बड़ा जहाज़ था और पालों के सहारे चलता था।

इस जहाज़ में कई लड़के काम करते थे, लेकिन उनमें से दो लड़कों से मेरी दोस्ती हो गई। उनमें से एक का नाम था जैक मार्टिन। वह काफी लम्बा-तगड़ा और देखने में सुन्दर था। उसकी उम्र अठारह साल थी। वह बड़ा निडर और साहसी लड़का था, और साथ ही बड़ी हंसोड़ तबीयत का था। दूसरे का नाम था पेटरकिन गे, जिसकी उम्र लगभग चौदह साल थी। वह भी बड़ा मजेदार लड़का था और हमेशा किसी-न-किसी शरारत में लगा रहता था।

जब हम लोग अमेरिका महाद्वीप के सबसे दक्षिण में हार्न अन्तरीप के पास पहुंचे तब मौसम बहुत ही ठंडा और

तूफानी हो गया। इस अंतरीप के पास से यात्रा करना बहुत खतरनाक माना जाता था। इसके आसपास ही कई जहाज़ टूट चुके थे। लेकिन भगवान की कृपा से किसी तरह हम लोग इस अन्तरीप को पार कर गए। कुछ ही सप्ताह बाद हमारा जहाज़ प्रशान्त महासागर में जा पहुंचा। अब मौसम काफी अच्छा हो गया था और हल्की हवा बहने लगी थी।

अन्त में हम लोग प्रशान्त महासागर में बने मूंगे के द्वीपों के पास जा पहुंचे। जब हम लोग एक द्वीप के पास से गुजरे तब मुझे जो खुशी हुई, उसे मैं कभी भूल नहीं सकूंगा।

मैं उस छोटे-से द्वीप के चमकते हुए किनारों और लम्बे-लम्बे नारियल के पेड़ों को एकटक देखता रहा। हम तीनों मित्र उस द्वीप को बहुत ध्यान से देख रहे थे। तीनों की ही बड़ी इच्छा थी कि हम किसी तरह मूंगे के द्वीप पर उतर सकें। कुछ ही दिनों बाद हमारी यह आशा भी पूरी हो गई। एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी और हमें ऐसे ही एक द्वीप पर पहुंचने का मौका मिल गया।

हुआ यह कि एक रात को जब हमारा जहाज़ महासागर में काफी आगे बढ़ गया था, तो अचानक समुद्र में एक बहुत बड़ा तूफान आया। तूफान के पहले ही झोंके में हमारे जहाज़ के दो मस्तूल टूट गए और कई पालें फट गयीं। जल्दी-जल्दी सभी पालों को उतार दिया गया। पांच दिन तक हमारा जहाज़ तूफान में फंसा रहा। ऊंची-ऊंची लहरों के थपेड़ों में हमारा जहाज़ तिनके की तरह इधर से

उधर फिंकने लगा। सभी जहाजी घबरा गए। सबको लगा कि अब जहाज़ बच नहीं सकेगा।

हम लोग अपने रास्ते से काफी दूर भटक गए थे। कप्तान का कहना था कि यह पता लगाना बहुत मुश्किल है कि हमारा जहाज़ इस समय कहां पहुंच चुका है। हम लोगों को बराबर यह डर बना रहता था कि कहीं हमारा जहाज़ उन समुद्री चट्टानों से न टकरा जाए जो प्रशान्त महासागर में जगह-जगह फैली हुई हैं।

तूफान के छठे दिन सवेरे हम लोगों को कुछ दूर ज़मीन दिखाई दी। यह एक छोटा-सा टापू था, जो मूंगे की चट्टानों से घिरा हुआ था। कुछ चट्टानें इस तरह फैली हुई थीं कि समुद्र और टापू के बीच एक छोटी-सी खाड़ी बन गई थी। इस खाड़ी का पानी काफी शान्त था, क्योंकि तूफानी लहरें चट्टानों से टकराकर रह जाती थीं। इस खाड़ी तक पहुंचने के लिए चट्टानों के बीच से रास्ता बना हुआ था। हमारा जहाज़ इसी रास्ते की ओर बढ़ रहा था।

लेकिन जैसे ही जहाज़ उसके पास पहुंचने को हुआ कि एक बहुत बड़ी लहर के थपेड़े से जहाज़ की पतवार टूट गई और जहाज़ बेकाबू हो गया। तूफानी हवा और ऊंची-ऊंची लहरें हमारे जहाज़ को गेंद की तरह उछालने लगीं।

कप्तान ने अपने आदमियों से कहा, "भाइयो, अब मौका नहीं है। हम लोग ज़िन्दगी और मौत के बीच झूल रहे हैं। जहाज़ का कोई ठिकाना नहीं है। जल्दी से नाव को

पानी में उतारने की कोशिश करो। नाव के सहारे हम लोग आधे घंटे में चट्टानों तक पहुंच जाएंगे।"

जहाज़ी निराश होकर नाव तैयार करने लगे। लेकिन ऐसे तूफानी सागर में एक छोटी-सी नाव के आगे बढ़ने की कोई संभावना नहीं दिखाई देती थी। मेरे साथी जैक ने मुझे और पेटरकिन को अपने पास बुलाकर कहा, "देखो भाई, इस संकट की घड़ी में हम लोगों को साथ रहना चाहिए। तुम लोग देख ही रहे हो कि छोटी-सी नाव में इतने सारे आदमी बैठेंगे तो भला वह कैसे पार लग सकेगी? जरूर ही वह उलट जाएगी। हम लोगों को जहाज की एक बड़ी डांडी को पकड़ लेना चाहिए। अगर जहाज़ डूब भी जाए तो हम लोग इस डांडी के सहारे तैरते हुए उस खाड़ी में पहुंच जाएंगे।" यह डांडी एक बहुत बड़े लट्ठे के समान थी और पानी में गिरने पर डूब नहीं सकती थी। हम लोगों ने जैक की बात मान ली।

जहाज़ किसी तरह लहरों के थपेड़ों से चट्टानों की ओर बढ़ने लगा। कप्तान की आज्ञा से सभी जहाज़ी एक छोटी-सी नाव में जा बैठे। कप्तान ने हम लोगों को भी साथ चलने को कहा, लेकिन हम लोगों ने इंकार कर दिया। जैसे ही नाव कुछ दूर आगे बढ़ी कि एक बहुत बड़ी लहर के थपेड़े से जहाज़ के दो टुकड़े हो गए। जैक के कहने के अनुसार हम लोग डांडी को पकड़े हुए थे। अब इस डांडी को किसी तरह जहाज़ से अलग करने की समस्या थी, ताकि हम लोग इसके सहारे तैरते हुए आगे बढ़ सकें।

जैक एक कुल्हाड़ी ले आया और उससे उन रस्सियों को काटने लगा, जिनसे डांडी बंधी हुई थी। लेकिन जहाज़ के हिलने के कारण वह निशाना चूक गया और कुल्हाड़ी डांडी में फंस गई। उसने इतने जोर से कुल्हाड़ी चलाई थी कि अब उसको डांडी से अलग करना मुश्किल हो रहा था। कुल्हाड़ी का फल कील की तरह डांडी में घुस गया था।

इस बीच एक बहुत बड़ी लहर का थपेड़ा आया और डांडी टूटकर समुद्र में जा गिरी। उसके साथ ही हम लोग भी समुद्र में आ गिरे। मैं सिर्फ इतना ही देख पाया कि जहाज़ियों से भरी हुई नाव एक भंवर में फंसकर चक्कर खा रही थी और जहाज़ी बुरी तरह चिल्ला रहे थे। समुद्र में गिरने के साथ ही मैं बहुत-सा पानी पी गया और डूबने लगा। इसके बाद क्या हुआ इसका मुझे कुछ पता नहीं।

होश आने पर जब मैंने आंखें खोलीं तो अपने आपको ऊंची-सी चट्टान पर छाया में किनारे की मुलायम घास पर पड़ा पाया। पेटरकिन मुझ पर झुका था और मेरे मुंह पर पानी के छींटे मार रहा था। और जैक मुझे झकझोर कर पुकार रहा था, "राल्फ! राल्फ!! तुम्हें क्या हो गया था? होश में आओ।"

मैंने आंखें खोलकर मुस्कराते हुए कहा, "क्यों जैक, मुझे क्या हुआ? मैं तो बिल्कुल ठीक हूं।" यह कहते हुए मैंने अपनी कोहनी के बल उठने की कोशिश की, लेकिन तभी मेरा हाथ अपने माथे से छू गया और खून से लाल हो गया। मैं घबरा उठा। मेरी कनपटी में चोट लग गई थी।

जैक ने मुझे सहारा देकर उठाते हुए कहा, "राल्फ, तुम लेटे रहो। अभी तुम्हारी तबियत ठीक नहीं हुई है। लो, यह पानी अपने होंठों से लगा लो। पास ही साफ पानी का एक झरना बह रहा है। वहीं से मैं अपना रूमाल गीला करके लाया हूं। अभी तुम कुछ बोलो-चालो मत, आराम से लेटे रहो।"

उसके बाद पेटरकिन बोला, "नहीं, इसको बोलने दो भाई! इतनी देर से वह बिल्कुल मुर्दे की तरह पड़ा था। मैं तो बहुत डर रहा था कि इसको हो क्या गया है!"

इसके बाद जैक से मैंने पूछा कि जहाज़ से कूदने के बाद से अब तक क्या हुआ? वह बताने लगा, "जब हम तीनों जहाज़ से उछलकर पानी में गिरे तो मैंने देखा कि तुम्हारा सिर डांडी से टकरा गया था। इसके बाद तुम पानी में डूबने लगे। पेटरकिन ने तुमको बचाने की कोशिश की, लेकिन इसके हाथ में एक दूरबीन थी, उसे तुमने डूबते समय पकड़ने की कोशिश की जिससे इसके मुंह में थोड़ी-सी चोट आ गई। लेकिन फिर भी किसी तरह हम लोगों ने डांडी को पकड़ लिया और फिर तैरते हुए इस खाड़ी के अन्दर आ गए और फिर धीरे-धीरे किनारे लग गए।"

"लेकिन कप्तान और दूसरे जहाज़ियों का क्या हुआ?" मैंने आश्चर्य से पूछा।

जैक अपना सिर हिलाकर बोला, "मुझे उनमें से किसी के बच निकलने की उम्मीद नजर नहीं आती। मैंने देखा कि उनकी नाव लहरों के थपेड़ों से उछलकर जहाज़ के पिछले

हिस्से से टकराई और फिर उछल गई। लेकिन न जाने फिर कैसे वह सीधी हो गई और सब लोग उसमें चढ़ गए। हवा के झोंकों के कारण उनकी नाव किनारे नहीं लग सकी। और इस टापू से दूर बहती चली गई। कुछ कहा नहीं जा सकता। हो सकता है, वे लोग बच गए हों।"

2

हम लोगों ने अपने गीले कपड़े सूखने के लिए वहीं घास पर फैला दिए। हवा अब भी काफी तेज चल रही थी। आसमान में कहीं बादल नजर नहीं आ रहे थे, हालांकि ऐसे तूफानी मौसम में पानी अक्सर बरसता है।

कपड़े सूख जाने के बाद हम लोगों ने आगे की योजना बनानी शुरू की। यह मूंगे का टापू था। ऐसे ही टापू में पहुंचने के हम लोग सपने देखा करते थे। एक दुर्घटना में फंसकर हम लोग सौभाग्य से इस द्वीप में पहुंचे थे। इसके अलावा, यह पता नहीं कि हमें कितने दिन तक यहां रहना है और इस द्वीप पर किसी आदमी से हमारी मुलाकात होगी या नहीं। इसलिए हम लोगों ने अपनी-अपनी जेबें टटोलीं। जो कुछ सामान हमारे पास निकला, उसे अपने सामने एक चट्टान पर रखकर हम लोग आगे की सोचने लगे।

हमारे पास जो सामान निकला वह इस प्रकार था—एक छोटा-सा चाकू, जिसका फल आगे से टूटा हुआ

था और उस पर जंग भी लगा था, जर्मन सिलवर की एक पेंसिल, जिसके अन्दर सीसा नहीं था; छः गज लम्बी एक रस्सी, एक सुई, जहाज़ की दूरबीन जो जहाज़ से कूदते समय पेटरकिन के हाथ में रह गई थी, थोड़ी-सी रुई, जैक की एक पीतल की अंगूठी।

हम लोगों ने अपनी चीज़ों की गिनती की और सोचना शुरू किया कि आगे इनका किस प्रकार उपयोग किया जा सकता है। तभी अचानक जैक को याद आया कि वह जहाज़ की डांडी भी तो है। वह भी हमारे काम आ सकती है।

यह सुनकर पेटरकिन बोला, "भला वह क्या काम आएगी? इस टापू पर बहुत-से ऊंचे-ऊंचे पेड़ हैं, जिनसे उसके जैसी हज़ारों डांडियां बनाई जा सकती हैं।"

जैक ने कहा, "अरे, नहीं भाई, वह बहुत काम आएगी। चलो, हम लोग उसको उठा लाएं। उसमें बहुत-सी कीलें लगी हुई हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि वह कुल्हाड़ी भी तो उसमें फंसी हुई है। इस जंगल में कुल्हाड़ी की हम लोगों को बहुत जरूरत होगी।"

हम लोग वहां से उठकर किनारे की ओर चल दिए। मैंने आसपास देखा तो वह टापू मुझे बहुत सुन्दर दिखाई दिया। ऊंचे-ऊंचे पेड़ों की छाया में जगह-जगह फूलदार पौधे लगे थे। मुलायम और हरी घास फैली हुई थी। यह टापू चट्टानी था और कुछ-कुछ जगहों पर चट्टानें समुद्र में काफी दूर तक चली गई थीं।

किनारे पर पहुंचकर मेरे साथी डांडी में से कुल्हाड़ी को अलग करने की कोशिश करने लगे और मैं किनारे की एक चट्टान पर चढ़कर इधर-उधर देखने लगा। मेरे दाहिनी तरफ काफी दूर तक बालू का किनारा चला गया था और बाईं तरफ ऊंची-ऊंची चट्टानें थीं, जिन पर समुद्र की लहरें आकर टकरा रही थीं। समुद्र में कुछ दूर आगे मूंगे की चट्टानों की दीवार-सी बनी हुई थी, जिससे टापू के पास एक खाड़ी बन गई थी। खाड़ी के बाहर समुद्र में ऊंची-ऊंची लहरें उठ रही थीं।

पेटरकिन ने किसी तरह डांडी को उलट दिया और जैक ने ज़ोर लगाकर कुल्हाड़ी उसमें से निकाल ली। वह खुशी से चिल्लाकर बोला, "लो भाई, कुल्हाड़ी निकल आई। इसका फल काफी नया मालूम होता है। अच्छा, अब डांडी में से कुछ कीलें और लोहे के टुकड़े निकाल लिए जाएं। ये भी हमारे बहुत काम आएंगे।"

जब हम लोग अपनी पुरानी जगह वापस लौटे तब कुछ अंधेरा हो रहा था। हम लोगों ने जल्दी-जल्दी कुछ पेड़ों की टहनियां और लम्बी-लम्बी पत्तियां इकट्ठी करनी शुरू कीं, ताकि रात काटने के लिए छोटी-सी झोंपड़ी बनाई जा सके।

कुछ ही देर में हमने एक छोटा-सा टट्टर बनाकर चार ऊंची-ऊंची टहनियों पर खड़ा कर दिया। इसी के नीचे हमें रात बितानी थी। उस टापू का मौसम बड़ा अच्छा था और रात में कुछ ओढ़ने की ज़रूरत नहीं थी। सिर्फ ओस और

पानी से बचाव का इन्तज़ाम करना था। जब यह व्यवस्था हो गई तब हमने अपनी झोंपड़ी में जमीन पर सूखी पत्तियां और घास बिछाकर एक गद्दा-सा बना लिया। फिर हमें खाने की सुध आई। लेकिन तभी हमें यह भी याद आया कि हमारे पास आग जलाने का कोई साधन नहीं है।

इस बीच पेटरकिन बोला, "समुद्र के किनारे चट्टानों के पास बहुत-से चकमक पत्थर पड़े हैं। आओ, हम लोग उन्हीं से चिनगारी निकालकर आग जलाने की कोशिश करें।"

लेकिन इस तरह आग नहीं जल सकी। एक तो रुई भीगी हुई थी और बहुत ही दब गई थी, दूसरे पत्थर भी बहुत अच्छे नहीं थे। उनमें से चिनगारियां तो निकलती थीं, लेकिन रुई जल नहीं पाती थी।

अन्त में जैक ने एक दूसरी तरकीब निकाली। वह बोला, "लाओ, मैं कोशिश करता हूं। मुझको वह रस्सी दे दो और एक लचकीली टहनी तोड़ लाओ!"

उसने टहनी में रस्सी बांधकर एक धनुष बनाया। फिर एक सूखी लकड़ी लेकर चाकू से इसके दोनों सिरे नुकीले किए। एक सिरा उसने लकड़ी के एक टुकड़े के सहारे अपने सीने से दबाया और दूसरा सिरा एक चकमक पत्थर पर थोड़ी-सी रुई रखकर दबा दिया और फिर ज़ोर-ज़ोर से धनुष को चलाना शुरू किया, जिससे वह लकड़ी घूमने लगी।

कुछ ही देर में रुई से धुआं निकलने लगा और एक मिनट बाद ही रुई जल उठी। इसके बाद हम लोगों ने

पत्तियों और सूखी टहनियों के एक ढेर में आग लगा दी ताकि रात में गर्मी भी रहे और आसपास रोशनी भी हो सके। हम लोग कुछ कच्चे नारियल तोड़ लाए थे। आराम से आग के आसपास बैठकर हम नारियल खाने लगे और उनका पानी पीने लगे।

रात अंधेरी थी। तारे टिमटिमा रहे थे। हल्की-हल्की हवा बह रही थी। मूंगे की चट्टानों पर समुद्र की लहरों के टूटने की आवाज़ आ रही थी। थके-मांदे होने के कारण थोड़ी ही देर बाद हम लोगों को नींद आ गई।

3

कई दिन तक हम लोग अपनी झोंपड़ी के आस-पास ही रहे और उसको अधिक-से-अधिक आरामदेह बनाने की कोशिश करते रहे। इस बीच एक-दो मील से ज्यादा दूर हम लोग कभी नहीं गए। हम लोग खूब फल तोड़कर लाते थे और आराम से खाते थे। दिन में कई बार खाड़ी में नहाते थे और तैरते हुए काफी दूर निकल जाते थे।

जैक ने डांडी में से निकाले हुए तीन इंच लम्बे लोहे के टुकड़े को खूब घिसकर एक अच्छा-सा चाकू बना लिया था। पेटरकिन ने रस्सी में कील फंसाकर मछली मारने की बंसी बना ली। वह कांटे में एक केंकड़ा फंसाकर पानी में तब तक लटकाए रहता था जब तक कि कोई मछली उसको पकड़ नहीं लेती। इसके बाद झटके के साथ उसे बाहर



खींच लेता था। लेकिन चूंकि रस्सी बहुत छोटी थी और हमारे पास कोई नाव नहीं थी, इसलिए हम बहुत कम मछलियां पकड़ पाते थे।

बाद में हम लोगों ने उस पूरे टापू का चक्कर लगाने का कार्यक्रम बनाया। जैक ने कहा, "लेकिन इस यात्रा को शुरू करने से पहले हमें अपनी रक्षा के लिए कुछ हथियार तैयार कर लेने चाहिए।" और पेटरकिन ने एक छोटे-से हल्के और मज़बूत पेड़ को काटकर उसमें से बारह फुट लम्बी एक लग्गी निकाल ली। उसकी नोंक पर उसने लोहे की एक तेज़ धारवाला टुकड़ा बांध दिया। इस तरह भाला तैयार हो गया। मैंने नारियल के रेशे को बटकर उससे कुछ रस्सियां बनाईं और फिर एक गोफन तैयार किया, जिसके सहारे मैं काफी दूर तक पत्थर फेंक सकता था। जैक ने पांच फुट लम्बा एक धनुष और दो बाण तैयार किए। इस तरह हथियारों से लैस होकर एक दिन सवेरे ही हम लोग अपनी यात्रा पर निकल पड़े।

करीब एक-डेढ़ मील आगे जाने पर हम लोगों ने एक विचित्र दृश्य देखा। कुछ दूर चट्टानों में से पानी का एक मोटा-सा फव्वारा रह-रहकर हवा के ऊपर उठता था और फिर बन्द हो जाता था। कभी फव्वारा एक जगह दिखाई देता था, कभी दूसरी जगह। कुछ करीब जाने पर हम लोगों ने देखा कि फव्वारे समुद्र में पचास फुट किनारे की तरफ हटकर चट्टानों के बीच से उठ रहे हैं। थोड़ी-थोड़ी देर रुककर फव्वारे लगभग आस-पास से ही उठ रहे थे। हम

लोग इसका कुछ मतलब नहीं समझ सके और उस स्थान के समीप जा पहुंचे।

पास जाने पर हमें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उस चट्टानी किनारे में जगह-जगह छेद बने हुए थे। छेद काफी बड़े थे। इन्हीं में से होकर पानी के मोटे-मोटे फव्वारे आसमान की ओर उठ रहे थे। चट्टानों के नीचे से गड़गड़ाहट की आवाज़ आ रही थी। जैसे ही एक फव्वारा उठता था कि यह आवाज़ बढ़ जाती थी। एक फव्वारा तो बिल्कुल उस जगह के पास से ही उठा, जहां मैं जैक के पास खड़ा था। हम लोग उछलकर अलग हट गए, लेकिन फव्वारे से उड़े छींटों के बादल ने हमें पूरी तरह से नहला दिया। पेटरकिन हमसे कुछ दूर खड़ा था। हमारी यह दुर्दशा देखकर वह ठहाके मारकर हंसने लगा। लेकिन थोड़ी ही देर में उसकी हंसी गायब हो गई। उसके पैरों के पास से ही एक मोटा-सा फव्वारा बड़ी तेजी से ऊपर उठा। पानी के जोर से पेटरकिन हवा में उठकर कई गज दूर जा पड़ा। इत्तफाक से वह ऐसी जगह गिरा था, जहां ऊंची-ऊंची घास उगी हुई थी। इसलिए उसे विशेष चोट नहीं पहुंची। वरना, बहुत सम्भव था कि उसकी पसलियां टूट जातीं।

कुछ देर बाद जैक ने कहा, "जानते हो, ये फव्वारे क्यों उठ रहे हैं? असल में बात यह है कि यह किनारा नीचे से काफी दूर तक पोला है। एक तरह से चट्टान की छत काफी दूर तक पानी में बढ़ आई है। लेकिन इसके नीचे गुफाएं बनी हुई हैं, जिनमें जाकर लहरें टकराती हैं और उन गुफाओं

की छतों में जो छेद है उनसे पानी ऊपर उठ आता है। नीचे जो गड़गड़ाहट होती है वह पानी के टकराने के ही कारण है।"

हम लोग वहां से आगे बढ़कर बिल्कुल किनारे पहुंच गए, जहां खाड़ी की हल्की-हल्की लहरें आकर चट्टानों से टकरा रही थीं। अचानक जैक बोला, "पेटरकिन, अपना भाला संभालो ! देखो, नीचे कोई बड़ी भारी सुनहरी मछली तैर रही है !"

पेटरकिन ने निशाना ताककर अपना भाला ज़ोर से पानी में फेंका। भाला उस सुनहरी चीज़ के आर-पार निकल गया। लेकिन जब भाले को पानी से बाहर निकाला गया तो वह खाली निकला और वह सुनहरी चीज़ पानी में अपनी बड़ी-सी पूंछ हिलाती रही। यह देखकर हम लोगों के आश्चर्य की सीमा नहीं रही। हम लोगों ने कई बार अपना भाला उस सुनहरी चीज़ पर मारा। लेकिन भाला खाली ही ऊपर आ जाता था और वह चीज बराबर अपनी जगह तैरती रहती थी।

हम लोगों की समझ में कुछ नहीं आ सका और हम अपनी यात्रा पर आगे बढ़े। आगे दो पहाड़ियों के बीच चौड़ी-सी घाटी पड़ती थी, जो खूब हरी-भरी थी। यहां के पेड़ फलों से लदे हुए थे। कई तरह के ऐसे भी पेड़-पौधे थे, जिन्हें हम पहली बार देख रहे थे। हम लोगों ने खूब फल खाए। आगे बढ़ने पर टापू के दूसरे किनारे पर हमें फिर वैसे ही फव्वारे मिले। लेकिन ये फव्वारे बहुत ऊंचाई तक

उठ रहे थे, क्योंकि इस किनारे पर समुद्र की लहरें सीधी आकर टकराती थीं।

आगे एक छोटा-सा जंगल मिला। हम लोगों ने यहीं रात बिताने का निश्चय किया। अचानक कुछ बगुले उधर से उड़ते हुए गुज़रे। मैंने अपने गोफन में एक पत्थर रखकर फेंका जो सौभाग्य से एक बगुले को जा लगा। उसके ज़मीन पर गिरते ही पेटरकिन ने उसको अपने भाले की नोंक में फंसा लिया। कुछ दूर आगे चलने पर हम लोगों ने इसी तरह एक कबूतर का शिकार किया। इन्हीं को भूनकर खाया गया। एक पेड़ के नीचे हम लोगों ने आराम से रात बिताई।

दूसरे दिन सवेरे हम फिर आगे चले। एक बड़े-से पेड़ की छांव में हमें बहुत-से सूअर बैठे दिखाई दिए। उनमें कई छोटे थे और कई बड़े थे। बड़े सूअरों को हम छेड़ना नहीं चाहते थे। लेकिन पेटरकिन को सूअर का मांस बहुत पसन्द था। वह एक सूअर को मारे बिना वहां से आगे नहीं बढ़ना चाहता था। उसने किसी तरह हल्ला करके सूअरों को वहां से खदेड़ दिया और एक छोटे-से सूअर का पीछा करना शुरू किया। करीब एक घंटे-भर बाद वह अपने भाले में सूअर को फंसाए हुए वापस लौटा।

उस दिन हम लोगों ने वहां बहुत-सा घास-फूस और सूखी डालियां इकट्ठी करके खूब बड़ी-सी आग जलाई और उस पर उस सूअर को पूरे का पूरा भून लिया। बहुत दिनों बाद उस दिन बढ़िया भोजन मिला। खा-पीकर हम लोग फिर चल दिए। इस तरह लगभग चार दिनों में हम लोगों ने

पूरे टापू की परिक्रमा कर डाली और अपनी झोंपड़ी में वापस लौट आए।

4

लगभग तीन सप्ताह बाद हम घूमने के ख्याल से फिर उस जगह पहुंचे जहां फव्वारे उठा करते थे। जब हम लोग समुद्र की लहरों को देखने के लिए बिलकुल किनारे चट्टान पर पहुंचे और नीचे झांकने लगे तब हमें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह बड़ी-सी सुनहरी चीज़ अब भी उसी जगह तैर रही थी और मछली की तरह अपनी पूंछ हिला रही थी।

इस बार हम लोगों ने इस चीज को मारने का निश्चय कर लिया। भाले में कुछ फुट लम्बी रस्सी बांधी गई और फिर उसे ज़ोर से उस चीज की तरफ फेंका गया। भाला पूरे का पूरा उस चीज के पार हो गया और फिर खाली ही ऊपर लौट आया। हम लोगों की समझ में ही नहीं आया कि आखिर यह मामला क्या है।

अन्त में जैक ने अपने कपड़े उतारते हुए कहा, "अच्छा पेटरकिन, तुम्हारे किए कुछ नहीं हो सकेगा। अब तुम अलग हटो। मैं जरा गोता मारकर पता लगाता हूं कि आखिर क्या चीज़ है!" यह कहकर वह पानी में कूद पड़ा।

उस जगह पानी बहुत शांत था और काफी नीचे तक की चीज़ आसानी से दिखाई देती थी। हम लोगों ने देखा

कि जैक हाथ-पांव फेंकता हुआ उस सुनहरी चीज़ के पास पहुंचा और फिर उसको भी पार करके उसके नीचे तैरने लगा। कुछ ही क्षणों बाद वह ग़ायब हो गया। वह इतना गहरा चला गया था कि हम लोग उसे देख नहीं पा रहे थे।

लगभग सात-आठ मिनट तक वह पानी में डुबकी लगाए रहा। हम लोगों को चिंता होने लगी। कुछ देर बाद वह बाहर निकल आया। ऊपर आकर एक चट्टान पर बैठते हुए उसने हम लोगों को बताया, "अरे भाई, यह तो बड़ा मजेदार किस्सा निकला। वह चीज़ जो हमें यहां एक बड़ी सुनहरी मछली की तरह दिखाई देती है, वह असल में रोशनी की एक किरण है, जो नीचे चट्टानों में बनी एक गुफा से आ रही है।"

कुछ सांस लेकर वह फिर बोला, "जैसे ही मैं गोता लगाकर नीचे पहुंचा, मैंने देखा कि चट्टान के नीचे से पानी में रोशनी फैल रही है। वह गुफा इस चट्टान के ठीक नीचे है, जहां हम लोग बैठे थे। मैंने रोशनी में देखा कि गुफा में घुसने का एक रास्ता बना हुआ है। मैं तैरता हुआ उसी में आगे बढ़ गया। लेकिन मेरी सांस खत्म हुई जा रही थी और मैं जल्दी से पानी की सतह पर लौट आना चाहता था। इसी बीच मैंने गुफा में देखा कि ऊपर उसी छत में भी कुछ रोशनी दिखाई दे रही है। मैं रोशनी की तरफ ऊपर उठ गया और कुछ ही देर में मेरा सिर पानी से बाहर निकल आया। ठीक वैसा ही एक छेद था, जिससे फव्वारे उठा करते हैं। मैं फिर से सांस लेकर नीचे आ पहुंचा।

"नीचे जाकर मैंने गुफा को अच्छी तरह देखना शुरू किया। वह काफी बड़ी थी। गुफा में जगह-जगह दीवारों में बड़ी सुन्दर चमकती हुई चीज़ें दिखाई देती थीं। मैंने पास जाकर देखा तो वे दीवारों में लगे हुए कुछ चमकदार पत्थर जैसे थे। मैं कुछ देर और गुफा में रहना चाहता था, लेकिन तभी मेरी सांस खत्म होने लगी और मैं बाहर निकल आया।"

उसकी बात सुनकर मैं और पेटरकिन भी उस विचित्र गुफा को देखने के लिए उतावले हो उठे। कुछ ही देर बाद हम दोनों भी ग़ोता लगाकर एक के बाद एक नीचे पहुंचे। जैक ने ठीक ही बताया था। वह गुफा सचमुच बड़ी विचित्र थी। उसमें लगे हुए पत्थरों से इतनी रोशनी निकलती थी कि गुफा के बाहर भी काफी दूर तक फैल जाती थी। उस दिन पूरी गुफा में पानी भरा हुआ नहीं था और हम गुफा के अन्दर आसानी से तैर सकते थे। ऊपर चट्टान में बने हुए छेद से हवा और रोशनी बराबर नीचे पहुंच रही थी।

दूसरे दिन हमने पूरी तैयारी के साथ गुफा की जांच करने का निश्चय किया। पेटरकिन तैरने में जरा कमज़ोर था। इसलिए उसको किनारे पर ही छोड़ा गया। मैं और जैक नीचे पहुंचे। हम लोग अपने साथ एक मशाल भी बनाकर लाए थे, जिसको सूखे पत्तों से इस तरह ढका गया था कि वह नीचे पहुंचने पर भी पानी से भीग न सके। रुई और चकमक पत्थर भी साथ ले लिए। नीचे पहुंचने पर चकमक पत्थर से आग पैदा करने और मशाल जलाने में



बड़ी मुश्किल हुई। लेकिन अंत में किसी तरह मशाल जल रही गई।

मशाल की रोशनी में हमने देखा कि वह एक बड़ी भारी गुफा थी और पूरी मूंगे की चट्टानों से बनी हुई थी। बीच-बीच में चट्टानों के ही खंभे बने हुए थे, जो सीधे छत पर चले गए थे। गुफा में कई जगह चट्टानें बड़े-बड़े नुकीले कांटों की तरह उठी हुई थीं। दो-तीन जगह छत से पिघला हुआ चूने का पत्थर टपक रहा था। इसी तरह छत से पिघले हुए पत्थर के टपकते रहने के कारण ये खंभे बन गए और इन्हीं खंभों के सहारे गुफा की छत टिकी हुई थी।

गुफा में आगे बढ़ने पर हमने देखा कि उसमें से कई बड़ी-बड़ी सुरंगें अन्दर तक चली गई थीं और छोटी-छोटी गुफाएं बनी हुई थीं। गुफा की दीवार में कई जगह ऐसे पत्थर लगे हुए थे, जो हमारी मशाल की रोशनी में इस तरह चमक उठते थे जैसे वे हीरे हों। इसलिए हम लोगों ने इस गुफा का नाम 'हीरे की गुफा' रख दिया।

5

कई महीने तक हम लोग उस टापू में बड़े आराम से रहे। हमें वहां किसी बात की तकलीफ नहीं थी। जैक ने एक छोटी-सी नाव बना ली थी। इसी में बैठकर हम लोग मछली मारने जाते थे, या कभी जंगल में शिकार के लिए निकल जाते थे। कभी-कभी हम लोग फव्वारों वाले किनारे

पर चले जाते थे और ग़ोता लगाकर 'हीरे की गुफा' का भी चक्कर लगा आते थे।

इस टापू का मौसम इतना सुंदर था कि साल-भर न तो ज्यादा जाड़ा पड़ता था और न ज्यादा गर्मी। पेड़ भी कई प्रकार के थे, जिनमें से कभी न कभी कोई पेड़ फलों से लदा ही रहता था। हमारे लिए भोजन की कमी इन्हीं फलों के कारण पूरी हो जाती थी। पेटरकिन अक्सर अपने भाले से सूअर का शिकार किया करता था और कभी-कभी हम लोग कबूतर वगैरह का भी शिकार कर लेते थे। इस बीच हमने अपने लिए नारियल की जटाओं से कुछ कपड़े भी तैयार कर लिए थे, क्योंकि हमारे पुराने कपड़े अब फटने को आए थे।

इस तरह खेल-कूद और शिकार में हमारे दिन बीत रहे थे। अचानक इस बीच एक घटना घट गई, जो बड़ी चिंताजनक और परेशान करने वाली थी। मैं जैक के साथ समुद्र में निकले हुए चट्टानी किनारे की ऊंची चोटी पर बैठा था और पेटरकिन अपने गीले कपड़े निचोड़ रहा था। अचानक दूर हमें दो चीज़ें हिलती-डुलती दिखाई दीं। मैंने जैक से पूछा, "क्यों, वे क्या हैं?"

वह बोला, "मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है। काफी देर से मैं उन्हें देख रहा हूं। पहले मुझे लगा कि समुद्री चिड़ियां होंगी, लेकिन वे दोनों चीज़ें समुद्री चिड़ियों से कुछ बड़ी दिखाई देती हैं।"

मैंने देखा कि जैक के चेहरे पर चिंता की रेखाएं उभर आई थीं। वह बड़े गौर से उन चीज़ों की ओर देख रहा था

जो अभी समुद्र में काफी दूर थीं। वे तेज़ी से हमारे टापू की ओर बढ़ी आ रही थीं। अचानक वह उछलकर खड़ा हो गया और बोला, "अरे राल्फ, ये तो नावें मालूम होती हैं! ये वैसी ही नावें हैं, जैसी हब्शी लोग काम में लाते हैं! इनको 'कैनो' कहा जाता है। पता नहीं ये लड़ाई की नावें हैं या यात्रा की, लेकिन इतना साफ दिखाई देता है कि ये हब्शियों की नावें हैं। इन टापुओं के ये आदिवासी लोग बड़े खूंखार होते हैं और आदमी को खा जाते हैं। अगर ये लोग इसी टापू पर आ रहे हैं तो हमको अपनी रक्षा के लिए कहीं-न-कहीं छिप जाना चाहिए।"

उसकी बात सुनकर पेटरकिन और मैं बहुत घबरा गए। हम लोग तेज़ी से जंगल की ओर भागे। अब तक नावें काफी करीब आ चुकी थीं। नावों पर से कुछ जंगलियों के चिल्लाने की आवाज़ भी आ रही थी। भागते समय हम लोग अपनी झोंपड़ी तक नहीं जा सके, इसलिए हमारे हथियार वहीं पड़े रह गए। एक जगह जंगल में पेटरकिन ने कुछ मोटे-मोटे सोटे तैयार कर रखे थे, जो देखने में गदा की तरह लगते थे। इनको उसने डालियों से काटकर बनाया था। असल में वह यहां सूअर का शिकार करने के लिए आया करता था और खाली समय में बैठा-बैठा इन डालों को काटा करता था।

हम लोगों ने एक-एक सोटा ले लिया। और फिर एक चट्टान के पीछे छिपकर बैठ गए। यहां से हम लोग उन नावों को बड़ी आसानी से देख सकते थे। हमने देखा कि



दूसरी नाव पहली नाव का पीछा कर रही थी। पहली नाव में कुछ औरतें और बच्चे बैठे हुए थे, और दो-चार आदमी भी थे, लेकिन दूसरी नाव में सिर्फ आदमी ही आदमी थे। प्रत्येक नाव में तीस-चालीस हब्शी होंगे।

पहली नाव तेजी से भागी आ रही थी। पास आकर वह हमारी चट्टान के ठीक नीचे कुछ दूर बालू के किनारे पर जोर से टकराई और उसमें बैठी हुई औरतें और आदमी उछल-उछलकर किनारे पर उतर गए। उनमें से तीन औरतें, जिनमें से दो की गोद में बच्चे भी थे, तेज़ी से दौड़ती हुई

जंगल में चली गईं।

उनके साथ के पुरुष वहीं किनारे पर रुके रहे और अपने हाथों में भाले, गदा और पत्थर लेकर दूसरी नाव के आने का इन्तज़ार करने लगे। शायद दूसरी नाव वाले इनके दुश्मन थे। नाव के पास आते ही इन लोगों ने पत्थर फेंकना शुरू किया। लेकिन इससे इनके दुश्मन घबराए नहीं। उनकी नाव भी कुछ गज़ दूर तेजी से आकर बालू के किनारे पर रुकी और वे लोग उछल-उछलकर पानी में कूद पड़े और अपने दुश्मनों की ओर बढ़ने लगे।

इसके बाद तो वहां एक अच्छा-ख़ासा युद्ध आरंभ हो गया। ज्यादातर लोगों के पास तरह-तरह के सोंटे और गदाएं थीं, जिनसे वे एक-दूसरे के सिर पर वार करते थे। आक्रमण करनेवाले दल का नेता शायद उनका सरदार था। वह देखने में बिल्कुल कोयले की तरह काला था। थोड़ी देर बाद सरदार पर उसके जैसे ही तगड़े और बड़े भारी शरीरवाले एक आदमी ने हमला कर दिया। वह एक बड़ी-सी गदा घुमा रहा था जो एक तरफ से नुकीली थी।

देखते-देखते दोनों आपस में गुंथ गए, और गदावाले ने सरदार के सिर पर चोट करने के लिए अपनी गदा उठाई कि इसी बीच एक आदमी के पत्थर की चोट से वह ज़मीन पर आ गिरा। सरदार ने अपनी छोटी-सी गदा से उसका सिर फोड़ दिया। जब पहली नाववालों ने अपने सरदार को ज़मीन पर गिरते देखा तो उनकी हिम्मत टूट गई और वे लोग जंगल की तरफ भागने लगे। लेकिन उनके शत्रुओं ने

उनका पीछा नहीं छोड़ा और एक-एक करके सबको मार गिराया।

हम लोगों ने देखा कि जो हब्शी ज़मीन पर गिर गए थे, उनमें से सब मरे नहीं थे। जो जिंदा थे, उनको चुनकर अलग किया गया और हाथ-पांव बांध दिए गए। फिर कैदियों को उठाकर वे लोग जंगल में रख आए। पता नहीं ऐसा उन्होंने क्यों किया। इसके बाद किनारे पर लौटकर वे लोग अपने और अपने साथियों के घावों को पानी से धोने लगे। हमलावरों में से जो लोग बच गए थे, उनकी संख्या लगभग अट्ठाईस थी। उनमें से दो आदमी अपने शत्रुओं की औरतों और बच्चों की खोज में जंगल में घूम रहे थे। इधर दूसरे दल में से जो लोग बच गए थे और जिनको बांधकर जंगल में छोड़ दिया गया था, उनकी संख्या पन्द्रह थी।

मैंने देखा कि हमलावरों में से एक आदमी कुछ सूखी पत्तियां और लकड़ियां बटोर लाया और उसने भी उसी तरह आग पैदा की जिस तरह जैक ने एक धनुष के सहारे लकड़ी को चकमक पत्थर पर रगड़कर पैदा की थी। उधर अचानक जंगल में एक चीख सुनाई दी और कुछ ही देर बाद वे दोनों जंगली उन तीन औरतों और उनके बच्चों को घसीटते हुए आग की तरफ आते दिखाई दिए। अब तक सभी हमलावर आग के आसपास इकट्ठे हो गए थे।

पास आने पर हम लोगों ने देखा कि उन औरतों में एक कम उम्र की लड़की थी जो अपने बड़े-बड़े ओंठों और

चिपटी नाक के बावजूद सुंदर मालूम होती थी। उसका रंग भी काला नहीं बल्कि हल्का भूरा था, जिससे हम लोगों ने अन्दाज़ लगाया कि वह किसी दूसरी जाति की थी।

इस लड़की को आगे किया गया और हमलावरों के सरदारों ने ज़ोर-ज़ोर से उससे कुछ पूछना शुरू किया। लड़की चुपचाप सिर झुकाए खड़ी रही। हम लोग यह समझ नहीं सके कि सरदार क्या कह रहा था। वह ज़ोर-ज़ोर से चीखता था और आग की तरफ इशारा करता जा रहा था। शायद वह उसकी जान लेने की धमकी दे रहा था।

यह देखकर जैक ने धीरे-से कहा, "पेटरकिन, क्या तुम्हारा चाकू भी वहीं झोंपड़ी में छूट गया या तुम्हारे पास है?"

जब पेटरकिन ने बताया कि चाकू उसकी जेब में है तो जैक ने आगे कहा, "अच्छा, तुम और राल्फ, दोनों झाड़ियों के बीच होते हुए कैदियों के पास चले जाओ और उनके हाथ-पैर की रस्सियां काटकर उनको आज़ाद कर दो। जाओ देरी न करो।" और वह भी एक मोटा-सा सोटा लेकर तैयार हो गया। इस बीच जैसे ही वह आदमी गदा लेकर उस लड़की को धमकाने लगा कि जैक अपने को रोक नहीं सका और ज़ोर से चिल्लाता हुआ चट्टान से कूदकर नीचे उन लोगों के बीच जा पहुंचा।

जैक ने पहले ही वार में उस आदमी को ज़मीन पर लिटा दिया और फिर बिना आगा-पीछा सोचे उसने सरदार पर भी वार कर दिया। यह सब इतना अचानक हुआ कि

लोग हक्के-बक्के रह गए। लेकिन सरदार बड़ा फुर्तीला था। वह फौरन उछलकर जैक के वार से बच गया। अब एक तरह से दोनों में युद्ध छिड़ गया। सरदार अपनी भारी गदा से जैक पर वार करता था और जैक उछलकर बचा जाता था। लेकिन जब जैक अपने सोटे से सरदार पर वार करता था तो उसका एक भी वार खाली नहीं जाता था, क्योंकि उसका सोटा हल्का था और सरदार को बचने का मौका नहीं मिल पाता था।

यह ग़नीमत थी कि दूसरे लोगों ने अभी सरदार का साथ देना शुरू नहीं किया था। वे तमाशा देख रहे थे और शायद सोच रहे थे कि इस लड़के को मारने के लिए उनका सरदार काफी है। परंतु कुछ देर बाद जब सरदार थकने लगा तो वे लोग दांत पीसते हुए आगे बढ़ने लगे। इसी बीच जैक ने कसकर सरदार के माथे पर वार किया, जिससे उसकी एक आंख निकल आई और वह बेहोश होकर ज़मीन पर आ गिरा।

लेकिन इसके पहले कि सरदार का शरीर ज़मीन पर गिरे, जैक भी जान-बूझकर उसके नीचे आ गिरा। इसका नतीजा यह हुआ कि जब सरदार के साथियों ने जैक को मारने के लिए अपनी गदाएं उठाईं तो वे जैक के ऊपर सरदार के शरीर को पड़ा हुआ देखकर कुछ देर के लिए ठहर गए।

इधर तब तक मैंने और पेटरकिन ने कैदियों को आज़ाद कर दिया था। वे लोग पत्थर और सोटे लेकर

सरदार के साथियों पर टूट पड़े। देखते-देखते उन्होंने सात आदमियों को ज़मीन पर लिटा दिया। दो आदमियों को हम लोगों ने मार गिराया।

थोड़ी ही देर में हमारे दल ने सरदार के साथियों पर काबू पा लिया और लगभग सबको मार गिराया। जैक भी मौका देखकर उठ खड़ा हुआ और उसने तीन आदमियों का सिर फोड़ दिया। अब जो लोग बच गए या घायल हो गए थे उनके हाथ-पांव बांध दिए गए। इस तरह हमलावरों की हार हुई। जिन कैदियों को हमने आजाद किया था, उन्होंने लड़ाई में हमारी पूरी मदद की और फिर हमें घेरकर खड़े हो गए और तरह-तरह के सवाल करने लगे।

इतना तो स्पष्ट था कि हम लोगों ने उनकी जान बचाई थी और उनको कैद से छुड़वाया था, इसलिए वे बहुत खुश थे। लेकिन उनकी बात हमारी समझ में नहीं आ रही थी। अंत में जैक ने आगे बढ़कर उनके सरदार का हाथ अपने हाथ में ले लिया, जिसका मतलब यह था कि हम-तुम दोस्त हैं। इस पर दूसरे हब्शियों ने हम सब लोगों से हाथ मिलाया।

इसके बाद हम इशारे से उन लोगों को अपने झोंपड़े के पास लाए और सबको एक क़तार में बैठाकर हमने उनको खाना खिलाया। हमारे पास सूअर का भुना हुआ गोश्त, कई भुनी हुई बत्तखें, मछलियां और बहुत सारे नारियल थे। इनके अलावा कई तरह के फल थे। इस तरह हब्शियों की एक अच्छी-सी दावत हुई।

शाम हो गई थी। सब लोग काफी थक गए थे, इसलिए सब आराम करने लगे। हब्शी भी हमारी देखा-देखी वहीं सो गए। उनके बच्चे कुछ देर तक रोते रहे। लेकिन थोड़ी देर बाद सब गहरी नींद में ख़र्राटे भरने लगे।

सवेरे हम लोगों ने इशारों से उन लोगों से और भी बातचीत करनी चाही, लेकिन वे हमारी बात समझ नहीं सके। अंत में हम लोगों ने उनके नाम जानने की एक तरकीब निकाली। जैक ने पहले अपने सीने की ओर इशारा करके कहा, "जैक !" इसी तरह उसने हम दोनों का परिचय भी कराया। इस पर हब्शियों के सरदार ने अपना नाम बताया, 'तरारो'। इसके बाद उसने उस छोटी लड़की का नाम बताया, 'अवेतिया'। इसी तरह हमें उन सब लोगों से परिचय प्राप्त हुआ। अगले दो-तीन दिन तक वे लोग अपनी नाव ठीक करते रहे।

जब नाव तैयार हो गई तो हम लोगों ने बहुत-से फल और नारियल उनकी नाव में लाद दिए। पेटरकिन ने उनको छः सूअर मारकर भेंट किए। इसके बाद कैदियों को नाव में लादा गया। विदाई के समय सब लोगों ने हाथ मिलाया। लेकिन तरारो ने नमस्कार के रूप में अपनी नाक जैक की नाक से रगड़ी। इस तरह उसने मेरे साथ और पेटरकिन के साथ भी किया। अब हम लोग समझे कि इन लोगों में नमस्कार का यही तरीका है। फिर हमने भी अपनी नाक से सबकी नाक रगड़ी और इस तरह उनको विदा किया।

6

एक दिन की बात है। मैं जैक के साथ किनारे की चट्टानों के पास ही समुद्र में तैर रहा था। पास ही हमारी नाव खड़ी थी। हम लोग मछली मारने के लिए जानेवाले थे। पेटरकिन किनारे की एक बहुत ऊंची चट्टान पर लेटा हुआ हम लोगों को देख रहा था। अचानक थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि पेटरकिन चट्टान पर खड़ा हो गया और खाड़ी की तरफ बार-बार इशारा करते हुए चिल्लाया, "राल्फ ! जैक ! जल्दी से ऊपर आ जाओ ! इधर खाड़ी में छोटा-सा जहाज़ दिखाई दे रहा है !"

हम लोग जल्दी-जल्दी पानी से बाहर निकले और दौड़ते हुए चट्टान पर पहुंच गए। सचमुच एक जहाज अपनी पालों को ताने हुए चट्टानों के बीच होता हुआ समुद्र से खाड़ी में प्रवेश कर रहा था। उसके आगे-आगे एक छोटी-सी नाव भी चल रही थी। यह देखकर हम लोग खुशी से उछलने लगे और जल्दी-जल्दी सामान उठाकर झोंपड़े की तरफ भागे।

हमने देखा कि जहाज़ कुछ दूर पर रुक गया और नाव बहुत धीरे-धीरे सीधे टापू की ओर बढ़ने लगी। एक घंटे-भर में वह उस चट्टान के पास तक आ पहुंची जो समुद्र में काफी दूर आगे तक निकली हुई थी। वहां से नाव किनारे के साथ-साथ चलने लगी। हम लोगों ने सोचा कि कहीं ऐसा न



हो कि नाव दूर निकल जाए और नाव वाले हम लोगों को देख न सकें। इसलिए हम लोग एक ऊंची चट्टान पर चढ़कर कपड़ों और नारियल की जटा से बने बोरों के टुकड़ों को हवा में हिलाकर इशारा करने लगे। थोड़ी ही देर बाद नाव वालों ने हमें देख लिया। उधर जहाज़ की छत पर भी कुछ लोग काम में लग गए। हमने सोचा कि शायद वे किनारे पर उतरने की तैयारी कर रहे हैं।

अचानक जहाज़ के एक कोने में आग की लपट उठी, फिर सफेद धुएं का बादल उठता हुआ दिखाई दिया। इसके पहले कि हम लोग कुछ समझ सकें कि आखिर वे लोग क्या कर रहे हैं, तोप का एक गोला सनसनाता हुआ आया और किनारे के पास उगे हुए पेड़ों से टकरा गया। एक ज़ोर का धड़ाका हुआ और कई नारियल के पेड़ उखड़ गए, और हमसे कुछ ही गज दूर एक चट्टान के टुकड़े-टुकड़े उड़ गए।

यह देखकर हमारे दिल धक् से रह गए। हमने देखा कि जहाज़ पर एक झण्डा लहरा रहा था, जिस पर खोपड़ी और हड्डियों वाला मौत का निशान बना था। अब हमें यह समझते देर नहीं लगी कि ये लोग समुद्री डाकू थे।

जैक बोला, "आओ, मेरे साथ चलो!" और हम लोग उसके साथ दौड़ते हुए जंगल में भाग निकले। फिर घूमकर हम लोग उस चट्टान के पास पहुंचे, जहां फव्वारे उड़ा करते थे। वहां से एक चट्टान के पीछे छिपकर हमने देखा कि नाव किनारे आ लगी थी और उसमें कई आदमी हथियार लिए हुए बैठे थे। उन सबके पास बंदूकें थीं। देखते-देखते

वे लोग किनारे पर उतर आए और लंबी कतार में फैलकर हमारी चट्टान को घेरने लगे।

यह देखकर जैक बोला, "अब हम लोगों के लिए बचने का कोई रास्ता नहीं है। सिर्फ वही हीरे की गुफा है, जहां हम छिप सकते हैं। चलो, वहीं चला जाए।"

पेटरकिन घबराकर बोला, "हीरे की गुफा में? तब तो मेरे लिए बचने की बहुत कम उम्मीद है। मैं अच्छी तरह ग़ोता नहीं लगा पाता हूं।"

"अरे, तुम आओ भी। हम लोग तुम्हें पानी में गहरे खींच लेंगे।" मैंने पेटरकिन से कहा।

तब तक डाकू पूरे किनारे पर फैल गए थे। उनमें से कुछ जंगल की ओर बढ़ गए और हमारी चट्टान की ओर घेरा बांधकर बढ़ने लगे। उन लोगों ने हमें देख लिया। हम लोग मौका पाते ही समुद्र में कूद पड़े। पेटरकिन ने भी हिम्मत बांधकर हमारे साथ ग़ोता लगाया और कुछ क्षणों में हम लोग हीरे की गुफा में जा पहुंचे।

इस गुफा में हम लोग अब तक पचासों बार आ चुके थे। इसको हम लोगों ने खेल-खेल में अपने लिए एक मनोरंजन की जगह बना लिया था। इस गुफा में एक और छोटी-सी गुफा थी, जिसमें चट्टान की एक काफी चौड़ी दीवार-सी थी। इस दीवार पर हमने बहुत-से नारियल इकट्ठे कर रखे थे। नारियल के कुछ बोरे भी यहां रखे थे। एक मशाल और आग जलाने का सामान भी हमने यहां जमा कर रखा था।

गुफा की दीवार इतनी चौड़ी थी कि हम आसानी से उस पर लेट सकते थे। उसमें हवा और रोशनी का भी पूरा इंतज़ाम था। उसकी छत के एक कोने में छेद था जो सीधा ऊपर चला गया था। गुफा में पहुंचकर हमने राहत की सांस ली। हम लोग बहुत धीरे-धीरे बातें कर रहे थे, लेकिन फिर भी उससे पूरी गुफा गूंज उठती थी। कुछ देर बाद गुफा में रोशनी का आना बंद हो गया और अंधेरा हो गया। हम लोगों ने समझ लिया कि रात हो गई है और सोने की तैयारी की।

सवेरे जब हम लोगों की नींद खुली तो गुफा के छेद में से हल्की-हल्की सी रोशनी आ रही थी। मुझको यह सब बड़ा विचित्र मालूम दे रहा था। हम ज़मीन से कई फुट नीचे थे और गुफा का आधा हिस्सा पानी से भरा हुआ था। उस गुफा में से कई छोटी-बड़ी सुरंगें आस-पास दूसरी गुफाओं में चली गई थीं और उनमें घना अंधेरा था। मैंने जैक से कहा, "तुम लोग यहीं रहो। मैं ज़रा डुबकी लगाकर ऊपर पहुंचता हूं और पता लगाता हूं कि अब क्या स्थिति है।"

मैं बहुत धीरे-धीरे पानी की सतह तक आया और चट्टानों के पीछे छिप गया। बहुत सावधानी से चारों तरफ देखने पर भी मुझे जब आसपास कोई नहीं दिखाई दिया तो मैं धीरे-धीरे रेंगता हुआ किनारे की चट्टान के ऊपर पहुंच गया। वहां कोई भी डाकू नहीं दिखाई दे रहा था और उनकी नाव भी चली गई थी। लेकिन मैंने सोचा कि बहुत



संभव है कि वे लोग यहीं कहीं छिपे बैठे हों। इसलिए मैं संभलकर आगे बढ़ने लगा।

कुछ और आगे बढ़ने पर मैंने एक चट्टान पर से देखा कि डाकुओं का जहाज़ खाड़ी से बाहर की तरफ जा रहा है। यह देखकर मैंने संतोष की सांस ली। मैंने सोचा कि चलकर अपने साथियों को यह खुशखबरी दूं कि डाकू यहां से लौट गए हैं। अचानक मेरे मुंह से निकल गया, "चलो मुसीबत टली। लगता है डाकू यहां से भाग निकले।"

जैसे ही मैंने यह कहा कि अचानक चट्टान के पीछे से

किसी ने उछलकर अपने फ़ौलादी हाथ से मेरा कंधा पकड़ लिया। मोटी आवाज में कहा, "कौन है रे तू ?"

मेरा कलेजा मुंह को आने लगा और घुटने थरथर कांपने लगे। मैंने देखा कि एक लंबा-तगड़ा आदमी, जिसका चेहरा खूंखार मालूम होता था, मेरे सामने खड़ा घृणा से मुस्करा रहा था। वह गोरे रंग का कोई यूरोपीय आदमी था। उसके कपड़े साधारण जहाज़ियों जैसे थे। उसने अपनी कमर में एक बड़ा कीमती रेशमी रूमाल बांध रखा था। उसमें दो पिस्तौलें और एक तलवार लटक रही थीं। उसके चेहरे पर घनी दाढ़ी-मूंछें थीं और सिर पर बाल भी बड़े-बड़े थे। मेरा हाथ कसकर पकड़ते हुए उसने जोर से सीटी बजाई। इसका जवाब दूर से उसके दूसरे साथी ने दिया और देखते-देखते वह छोटी नाव न जाने कहां से निकलकर चट्टान के पास होती हुई किनारे की तरफ बढ़ती हुई दिखाई दी।

उसने कड़ककर मुझे हुक्म दिया, "लड़के, जाओ, उस चट्टान के ऊपर आग जलाओ !" यह कहते हुए उसने एक पिस्तौल निकालकर मुझको धमकाना शुरू किया। मैंने आग जला दी। धुआं ऊपर उठने लगा और दो मिनट बाद ही डाकुओं का जहाज़ जो खाड़ी को पार करके समुद्र की ओर बढ़ रहा था, अचानक घूम पड़ा। टापू की तरफ लौटने से पहले उसने एक तोप दागकर अपने साथियों को कुछ इशारा किया। असल में डाकुओं ने यह दिखाने के लिए कि वे लोग टापू छोड़कर चले गए हैं, अपने जहाज़ को

खाड़ी के बाहर भेज दिया और कुछ लोग छोटी नाव को लेकर चट्टानों के पीछे छिपे हुए थे। कुछ देर में छोटी नाव पास आ गई और डाकुओं के सरदार ने नीचे से आवाज़ लगाकर कहा, "उस लड़के को उठाकर यहां नाव में ले आओ !"

तब दो-चार डाकू और मेरे पास आ पहुंचे। उनमें से एक ने मुझे कंधे पर उठा लिया और नीचे ले जाकर ज़ोर से नाव में फेंक दिया। मैं इतनी जोर से नाव में गिरा कि मेरी आंखों के आगे अंधेरा छा गया।

जब मुझे होश आया तो मैंने देखा कि डाकुओं की नाव टापू से काफी दूर निकल आई थी और जहाज़ के पास पहुंच रही थी। इतने में एक डाकू ने मुझे ठोकर मारकर खड़ा होने को कहा और फिर जहाज़ से लटकती हुई एक सीढ़ी की ओर इशारा कर दिया। मैं चुपचाप सीढ़ी चढ़कर जहाज में पहुंच गया। जहाज़ तेजी से समुद्र की ओर बढ़ चला। रात होने पर जहाज़ के कप्तान ने, जो डाकुओं का सरदार था, मुझे नीचे अपने कमरे में बुलाया।

नीचे एक छोटे-से कमरे में चांदी का एक दीया जल रहा था। कप्तान एक टेबुल के पास स्टूल पर बैठा एक बड़ा भारी नक्शा देख रहा था। मेरे वहां पहुंचते ही उसने मुझे घूरकर देखते हुए पूछा, "लड़के तुम्हारा नाम क्या है ?"

जब मैंने उसे अपना नाम बता दिया तो उसने फिर सवाल किया, "तुम कहां के रहनेवाले हो और इस टापू पर कैसे आए ? तुम्हारे साथ कितने आदमी हैं ?"

मैंने उसको सारा किस्सा बता दिया। लेकिन उसे हीरे की गुफा के बारे में कुछ भी नहीं बताया। जब मैंने उससे यह कहा कि यह जहाज़ समुद्री डाकुओं का मालूम होता है, क्योंकि इस पर काला झंडा फहरा रहा है, तो कप्तान हंसकर बोला, "अरे नहीं, ऐसी बात नहीं है। मैं कोई समुद्री डाकू नहीं हूं, बल्कि एक व्यापारी हूं। काला झंडा तो मैंने यों ही लोगों को डराने के लिए लगा रखा था। मैं तो फीजी द्वीप-समूह से चंदन की लकड़ी लाता हूं और इधर-उधर बेचता हूं। अच्छा, सुनो राल्फ, अगर तुम कायदे से रहो और ठीक से काम करो तो मै तुम्हें अपने जहाज़ में नौकर रख सकता हूं। मैं तुम्हें मुनाफ़े का कुछ हिस्सा दे दिया करूंगा। मुझे तुम्हारे जैसे एक भले लड़के की जरूरत है, जो मेरे कमरे की देखभाल करे और किनारे पर पहुंचने पर दूसरे ज़रूरी काम पूरे कर दे। बोलो, तुम्हारी क्या मर्जी है। क्या तुम चंदन के व्यापारी बनना चाहते हो?"

मैंने उसकी बातों का जवाब देने के बजाय कहा, "अगर तुम सचमुच एक भले आदमी हो, तो तुमने इस तरह मुझे अपने टापू से क्यों भगाया, तुम मुझे वापस वहीं क्यों नहीं भेज देते?"

कप्तान ने मुस्कराकर कहा, "मैंने गुस्से में आकर तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार किया है। इसका मुझे अफसोस है। मै तुम्हें वहां वापस पहुंचा दूंगा, लेकिन अभी हम लोग उस टापू से बहुत दूर निकल आए हैं। यह देखो नक्शा, हम लोग करीब पचास मील दूर निकल आए हैं!"

मैंने इसका भी कोई जवाब नहीं दिया। कप्तान बार-बार मुझे अपने जहाज़ में नौकर रखने के लिए कहता रहा। मेरे सामने और कोई चारा नहीं था। अतः मैं जहाज़ पर काम करने के लिए राजी हो गया।

7

इस जहाज़-यात्रा में मैंने बिल नाम के एक जहाज़ी से दोस्ती कर ली। बिल ने मुझे बताया कि कप्तान चंदन का व्यापारी भी है और एक समुद्री डाकू भी।

कुछ समय बाद हम लोग एमो नाम के एक द्वीप के पास पहुंचे। बिल ने मुझे बताया, "इस टापू पर मैं इस जहाज़ से कई बार आया हूं। यहां की चंदन की लकड़ी बड़ी मशहूर है। हम लोग कई बार यहां से चंदन ले गए हैं। लेकिन उसका हमें दाम चुकाना पड़ा है। यहां के हब्शी निवासी बड़े खूंखार होते हैं। वे आसानी से चंदन नहीं काटने देते। लेकिन हमारे कप्तान ने बराबर उनको ठगा है। इसलिए यहां के निवासी अब हम लोगों से घृणा करने लगे हैं। पिछली बार जब हम यहां आए थे तो उन्होंने हमारे साथ ठीक से बर्ताव नहीं किया। मुझे डर है कि कहीं इस बार उन लोगों से झगड़ा न हो जाए। लेकिन कप्तान तो ऐसे ही मौके की तलाश में रहता है।"

यह टापू भी मूंगे की चट्टानों से घिरा हुआ था। पास पहुंचने पर जहाज़ ने लंगर डाल दिया। फिर एक नाव

उतारी गई, जिसमें पंद्रह आदमी हथियार लेकर किनारे पर जाने के लिए जा बैठे। कप्तान ने मौका पड़ने पर जहाज़ की तोपों को तैयार रखने का हुक्म दिया और फिर वह मुझे अपने साथ लेकर नाव में जा बैठा।

कुछ ही देर में नाव किनारे लग गई। हब्शी निवासियों का गांव किनारे से लगभग आधे मील की दूरी पर था। हमें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि हमसे झगड़ा करने के बजाय टापू के निवासियों के मुखिया ने प्रेम से हमारा स्वागत किया और हमें अपने घर में चटाइयों पर आदर से बैठाया। इसके बाद पास के दूसरे टापू से आए हुए एक मुखिया से हम लोगों का परिचय कराया।

दूसरे दिन जहाज़ी टापू में गए और चंदन काट लाए। उस दिन कप्तान हमारे साथ नहीं गया। वह अपने साथियों को लेकर जहाज़ पर ही तैयार बैठा रहा और उसकी तोपों का मुंह मुखिया के घर की ओर तना रहा। तीसरे दिन जब जहाज़ी चंदन काटने निकले तो मैं भी उनके साथ-साथ किनारे पर गया।

दोपहर में जब सब लोग आराम करने लगे तो मैं इधर-उधर घूमने के लिए निकल गया। कुछ देर में मैं हब्शियों के एक गांव के पास जा पहुंचा। वहां बच्चे समुद्र के किनारे की बालू में खेल रहे थे। वहां शायद कोई मेला लगा था। मैं काफी देर तक इधर-उधर टहलता रहा और बाद में अपने साथी बिल को भी बुला लाया।

हम लोग घूमते हुए टापू के दूसरे किनारे पर पहुंचे,

जहां सैकड़ों आदमी जमा थे और पानी में होनेवाले खेलों और तैराकी दंगलों को देख रहे थे। अचानक मेरी नज़र एक आदमी पर पड़ी जो मुझे अपने दोस्त तारारो जैसा लगा। तारारो से मेरा परिचय अपने मूंगे के द्वीप पर हुआ था। उसे और उसके साथियों को हम लोगों ने दुश्मनों से छुड़ाया था। तारारो ने भी फौरन मुझे पहचान लिया। वह लपककर पास आया और मुझसे बड़े प्रेम से हाथ मिलाने लगा। बिल को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ।

मैंने उससे कहा, "हां बिल, यह मेरा पुराना दोस्त है। जैक, पेटरकिन और मैं—हम तीनों ने इसे और इसके साथियों को मौत के मुंह से बचाया था। यह अपनी जाति का मुखिया है।" इसके बाद मैंने तारारो से अवेतिया नाम की उस लड़की के बारे में पूछा जिसको जैक ने बचाया था। मैंने देखा कि अवेतिया का नाम सुनकर तारारो कुछ नाराज हो गया।

यह एक बड़ी अच्छी बात थी कि बिल हब्शियों की भाषा जानता था। मेरे कहने पर वही तारारो से बातचीत कर रहा था। तारारो ने बातचीत में बताया कि अवेतिया दूसरे द्वीप के हब्शियों के सरदार से विवाह करना चाहती है, जिससे तारारो को घृणा है। तारारो उसका विवाह एक दूसरे सरदार के साथ करना चाहता है। अभी वह सरदार लड़ाई पर गया हुआ है। अगर उसके लौटकर आने पर भी अवेतिया ने उससे शादी करने से इनकार किया तो उसको सूअर की तरह भूनकर सरदार के पास भेज दिया जाएगा।

मैंने बिल से पूछा, "यह सूअर की तरह भूनकर भेजना क्या होता है?" वह बोला, "तुम तो जानते ही हो ये लोग जंगली हैं और आदमियों का मांस तक खा जाते हैं। जिस तरह हम लोग सूअरों को भूनकर खाते हैं, वैसे ही ये आदमी और औरतों को भून डालते हैं और खा जाते हैं। अगर अवेतिया ने इसका कहना नहीं माना तो यह उसकी जान ले लेगा।"

इसके बाद बिल के ज़रिये तारारो से पूछने पर पता चला कि अवेतिया उसके साथ यहां नहीं आई है। वह तारारो के द्वीप में ही है, जो यहां से पचास-साठ मील दक्षिण में है।

8

जैसा कि आशा थी, जहाज़ के कप्तान और टापू के मुखिया में अनबन बढ़ती गई। कप्तान के आदमी चन्दन का पेड़ काटकर गिराते जाते थे और फिर वहां से लकड़ी के कुंदों को जहाज में ले आते थे। अब तक उन्होंने बहुत-से पेड़ काटकर जंगल में जमा कर लिए थे। इधर मुखिया ज्यादा दाम मांग रहा था। उसने दाम लिए बिना चंदन उठाने से मना कर दिया था। लेकिन कप्तान ने अपने आदमियों को नहीं रोका। वे लोग माल लाकर जहाज़ में जमा करते रहे। अंत में एक दिन मुखिया ने कप्तान को धमकी दी कि वह लड़ाई की नावों से जहाज़ को घेर लेगा और करीब एक



हज़ार आदमियों को जहाज़ में आग लगाने के लिए भेज देगा।

उसकी इस धमकी से जहाज़ियों में खलबली मच गई। लेकिन अब वहां से भागना भी संभव नहीं था, क्योंकि जंगल में बहुत-से पेड़ उन्होंने काट डाले थे और इन पेड़ों को अपने साथ लाए बिना वे यहां से जाने के लिए तैयार नहीं थे। अंत में कप्तान ने एक योजना बनाई। वह सीधे-सीधे डकैती पर आ गया।

कप्तान के हुक्म पर जहाज को टापू के एक ऐसे किनारे पर खड़ा किया गया जहां से समुद्र की ओर भाग निकलना बहुत आसान था। जहाज़ से किनारे तक नाव के पहुंचने में मुश्किल से कुछ ही मिनट का समय लगता था। इस किनारे के पासवाले गांव में अभी तक मेला लगा हुआ था और लोग नाचने-गाने में मस्त थे। टापू के लगभग सभी निवासी यहां इकट्ठे थे।

जहाज़ को लंगर डालकर खड़ा कर दिया गया और कप्तान सारे आदमियों के साथ बन्दूकें लेकर और नाव में बैठकर किनारे पहुंच गया। किनारे पर पहुंचकर उसने कहा, "राल्फ, तुम हम लोगों के साथ नहीं जाओगे। तुम्हें इस नाव की देखभाल करनी है। नाव को तुम किनारे से कुछ दूर खड़ी रखना। जब हम लोग किनारे पर आएं तो तुम नाव पास ले आना और अगर हब्शियों में से कोई नाव के पास पहुंचने की कोशिश करे तो तुम नाव को जहाज़ की ओर भगा ले जाना।" यह कहकर वह बंदूक को अपने कंधे पर

लटकाकर अपने साथियों के साथ गांव की ओर बढ़ गया। वे लोग झाड़ियों और पेड़ों के पीछे छिपते हुए आगे बढ़ रहे थे।

थोड़ी देर बाद अचानक मैंने गोली चलने की आवाज़ सुनी। दूसरे ही क्षण गांव में हज़ारों आदमी चीखने-चिल्लाने लगे। अब युद्ध शुरू हो गया था। टापू के हब्शी निवासी कई टुकड़ों में बंटकर जहाज़ियों को घेरने की कोशिश कर रहे थे। उनकी चीख-चिल्लाहट और नारे बढ़ते जा रहे थे। बार-बार गोली चलने की आवाज होती थी। आवाज़ों से ऐसा लगता था कि हब्शी हमारे साथियों को खदेड़ते हुए किनारे की ओर बढ़े चले आ रहे हैं। कुछ देर बाद मैं यह देखकर चौंक पड़ा कि जंगलियों की एक टुकड़ी चुपके-चुपके झाड़ियों और पेड़ों के पीछे से आगे बढ़ रही थी। ये लोग कई सौ की तादाद में मालूम पड़ते थे और शायद जहाज़ियों को पीछे से घेरने की कोशिश कर रहे थे।

कुछ ही देर में फिर से घमासान युद्ध की आवाज़ें आने लगीं। अब गोलियों का चलना बंद हो गया था। हब्शियों की चीख-चिल्लाहट अब भी जारी थी। मैंने समझ लिया कि जहाज़ियों की हार हुई है और हब्शी खुशी से चिल्ला रहे हैं। जहाज़ी अब किनारे के पास तक आ पहुंचे थे। उनकी गोलियां खत्म हो गई थीं। वे भागते हुए नाव तक पहुंचने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन हब्शियों के तीर और भाले उन पर बुरी तरह बरस रहे थे। जहाज़ी चीख मार-मार कर एक-एक करके गिरते जा रहे थे। मैंने सोचा कि अब नाव को

जहाज़ की ओर भगा ले जाना ही ज्यादा ठीक है।

तभी अचानक मैंने देखा कि झाड़ी के पीछे से बिल भागता हुआ किनारे आ पहुंचा। मैंने फौरन नाव किनारे पर लगाई और फिर हम लोग तेज़ी से जहाज़ की ओर बढ़ चले। जहाज़ के पास पहुंचकर हमने फौरन लंगर की रस्सी काटी और जहाज़ को समुद्र की ओर बढ़ा दिया। हमने देखा कि किनारे पर हब्शियों की भीड़ लग गई थी। वे लोग अपने भाले हवा में फेंकते हुए गुस्से से चिल्ला रहे थे। देखते-देखते बहुत-से हब्शी पानी में कूद पड़े और जहाज़ की ओर बढ़ने लगे। लेकिन इस समय हवा ने हमारी मदद की। पालें तनी हुई थीं। जहाज़ तेज़ी से समुद्र की ओर बढ़ा जा रहा था।

अचानक बिल को एक तरकीब सूझी। वह दौड़ा-दौड़ा जहाज़ की छत पर गया। उसने तोप में बारूद ठूसकर और एक गोला रखकर किनारे की ओर तोप चला दी। गोला हब्शियों के बीच गिरा। उनमें भगदड़ मच गई। वे चीखते-चिल्लाते वहां से भागने लगे। अब उन्होंने जहाज़ की ओर बढ़ने की कोशिश छोड़ दी।

कुछ ही समय में हमारा जहाज़ टापू से काफी दूर निकल आया। मैं बुरी तरह थक गया था। समुद्र की ठंडी हवा में मुझे नींद आने लगी। जहाज़ अपने-आप चुपचाप आगे बढ़ा जा रहा था। बिल उसकी देख-रेख कर रहा था। इसलिए मैं आराम से जहाज़ की छत पर ही सो गया। शाम को भी मेरी नींद नहीं टूटी। और रात-भर मैं वहीं पड़ा सोता रहा।

9

सवेरे बिल ने झकझोरकर मुझे जगाया। आंख खुलने पर मैंने देखा कि सूरज काफी ऊपर चढ़ आया था। बिल मेरे सिरहाने बैठा था। थोड़ी ही देर में वह अपनी कुहनी के बल लेट गया। मैंने देखा कि उसका चेहरा उतरा हुआ है। मैं अचानक उठ बैठा और ध्यान से उसे देखने लगा। उसके सिर के बालों में खून जम गया था और कमीज पर भी कई जगह खून के धब्बे थे। मैंने उससे पूछा, "यह क्या हुआ, बिल, तुम्हें चोट लगी है।?"

बिल बोला, "हां रल्फ, लगता है मुझे गहरी चोट लगी है। मैं तुम्हारे जागने का इंतज़ार करता रहा। अब तुम जाकर जरा कप्तान के कमरे से ब्रांडी और रोटियां ले आओ।"

मैं दौड़ा-दौड़ा कप्तान के कमरे में पहुंचा और वहां से सामान ले आया। रोटी खाकर बिल को कुछ ताकत आई। वह कहने लगा, "हां, अब मैं कुछ ठीक हूं। लेकिन कमज़ोरी बेहद है।" उसने उठने की कोशिश की, लेकिन उठ नहीं सका और कराहते हुए लेट गया। मैंने उसको उठाकर एक चारपाई पर लिटाया और फिर उसके घाव को धो-पोंछकर मरहम-पट्टी की। जहाज़ में खाने-पीने का सामान काफी था। मैंने उसको ऐसी चीज़ें बना कर दीं, जिनसे उसे ताकत मिल सकती थी।

बिल को पिस्तौल की गोली का घाव लगा था। मेरे पूछने पर उसने बताया, "यह कप्तान की गोली का घाव है।

असल में मैंने उसकी आज्ञा के पहले ही हब्शियों पर गोली चला दी थी, जिससे नाराज़ होकर कप्तान ने मुझे गोली मार दी।"

हमारा जहाज़ आराम से आगे बढ़ा जा रहा था। उसकी सभी पालें खुली हुई थीं। हवा भी शांति से बह रही थी। मैंने बिल को आराम करने के लिए कहा। थोड़ी ही देर में वह सो गया। मैंने जहाज़ की पतवार संभाल ली। अभी तो चारों तरफ पानी ही पानी दिखाई दे रहा था। मुझे कुछ पता नहीं था कि हमारा जहाज़ कहां जा रहा है। मैं यही चाहता था कि जहाज़ को किसी तरह मूंगे के टापुओं के पास पहुंचाया जाए। मैं अंदाज़ से जहाज़ को उसी दिशा में ले जाने लगा जिधर से डाकू मुझे पकड़कर लाए थे।

रात में बिल की तबीयत ज्यादा खराब होने लगी। उसे बहुत तेज बुखार हो गया। घाव से खून बहना अभी तक बंद नहीं हुआ था। उससे लग रहा था कि वह अब बच नहीं सकेगा। उसने मुझे अपने पास बुलाकर कहा, "राल्फ, मैंने बड़ी भयानक ज़िंदगी बिताई है। बचपन से ही मैं जहाज़ी का काम कर रहा हूं और दुनिया-भर के बुरे काम मैंने किए हैं। तीन साल से मैं जहाज़ी डाकू का काम कर रहा हूं। जब मैं इन लोगों के चक्कर में आ फंसा, तब से मैं बड़ा निर्दयी हो गया था। अब तक न जाने मैं कितने आदमियों की जान ले चुका हूं''''लेकिन अब लगता है कि मेरा अंत समय आ चुका है। तुम ईश्वर से प्रार्थना करना कि वह मेरे पापों को क्षमा कर दे।"

इसके बाद उसने मुझे बाइबिल में से कुछ अंश पढ़कर सुनाने को कहा। मैं उसको सुनाता रहा। उस दिन तीसरे पहर बहुत ज़ोर की हवा चलने लगी। लगता था, कोई बहुत बड़ा तूफान आनेवाला है। मैं बहुत घबराने लगा। इतने बड़े जहाज़ को काबू में रखने के लिए सिर्फ दो ही आदमी थे। उनमें से भी एक घायल होकर पड़ा था। बिल मुझे बताता जाता था और मैं उसके कहने के अनुसार पालों को उतारता जाता था और पतवार को मोड़ता जाता था।

जब तूफान आया तो जहाज़ की हालत पानी में तैरनेवाले कार्क की तरह हो गई। लहरों के थपेड़ों से कभी वह बाएं जाता था तो कभी दाएं। सारी पालें उतार दी गई थीं। हम लोग कहां थे और जहाज़ लहरों के थपेड़ों में कहां जा रहा था, इसका हमें कुछ भी पता नहीं था। बाद में बिल ने मुझे सबसे ऊपर वाली पालों को खोलने के लिए कहा। तूफान का वेग कुछ कम हो गया था। लेकिन फिर भी इन पालों को खोलना बहुत मुश्किल का काम था। इनमें मुझे घंटेभर का समय लग गया। लेकिन पालों को फिर बांधकर मैंने पतवार को भी एक निश्चित दिशा में बांध दिया। अब मैं वहां से हटकर जहाज़ की छत पर जा सकता था और दूसरे काम भी कर सकता था। मेरा सबसे बड़ा काम तो था बिल की सेवा-शुश्रुषा और उसके खाने-पीने का प्रबंध करना।

लेकिन एक दिन अचानक रात को जब मेरी नींद खुली तो मैंने बिल को बुरी तरह तड़पते हुए पाया। वह ज़ोर-ज़ोर से कराह रहा था और लकड़ी के फर्श पर छटपटा

रहा था। मेरी समझ में नहीं आया कि क्या करूं। मैंने उसको छूकर देखा तो लगा कि उसका शरीर धीरे-धीरे ठंडा हो रहा है। मेरी आंखों में आंसू आ गए। सबसे ज्यादा अफसोस तो मुझे इस बात का था कि मैं कुछ नहीं कर पा रहा था। बिल के इशारे पर मैंने बाइबिल की पुस्तक उसके हाथों में थमा दी। थोड़ी ही देर में उसके प्राण निकल गए।

बिल के मरने पर मुझे बड़ा दुःख हुआ। इस संकटपूर्ण यात्रा में वही एकमात्र मित्र था। इतने बड़े जहाज़ पर मैं अकेला रह गया था। मुझे डर तो बिल्कुल नहीं लगता था लेकिन कभी-कभी बहुत अकेलापन महसूस होता था। मैंने तोप का एक गोला बिल के पांव में बांधा और फिर उसकी लाश को उठाकर समुद्र में फेंक दिया।

एक सप्ताह तक हवा ठीक बहती रही और समुद्र शांत रहा। अब मैंने लगभग सभी पालें खोल दी थीं। जहाज़ तेजी से आगे बढ़ता जा रहा था। मैं दिन-भर चारों दिशाओं में देखता रहता था कि कहीं दूर नजारा दिखाई दे जाए या कोई चिड़िया उड़ती हुई नजर आ जाए, लेकिन चौदह दिन तक मेरा यह प्रयत्न बिल्कुल असफल रहा।

पंद्रहवें दिन अभी मैं जहाज़ की छत पर सोया हुआ था कि अचानक एक चिड़िया की आवाज सुनकर मेरी नींद खुल गई। मैंने देखा कि वह एक बहुत बड़ी चिड़िया थी। दिन-भर वह मेरे जहाज़ पर रही और रात को न जाने कहां गायब हो गई।

दूसरे दिन सवेरे जब मैं ऊपरवाली एक पाल को ठीक

करने के लिए रस्सी की सीढ़ी के सहारे ऊपर चढ़ा तो मुझे अपनी दाहिनी तरफ दूर कुछ धुंधला-सा दिखाई दिया।

पहले तो मैं समझ नहीं सका कि यह क्या है, लेकिन ध्यान से देखने पर पता चला कि यह कोई टापू था। कुछ आगे बढ़कर मैंने देखा कि यह टापू भी मूंगे की दीवार से घिरा हुआ था। मूंगे की दीवार और टापू के बीच एक खाड़ी थी, जिसमें पहुंचने के लिए दो चट्टानों के बीच से रास्ता था। पहले तो मुझे शक हुआ कि यह कोई दूसरा टापू है, लेकिन पास पहुंचने पर मेरी खुशी की सीमा न रही। यह तो वही मूंगे का टापू था। यहीं मेरे दोस्त जैक और पेटरकिन मेरा इंतज़ार कर रहे थे।

अब उन लोगों को अपने आने की खबर कैसे दी जाए? अंत में मजबूर होकर मैंने वही डाकुओं वाला झंडा फहरा दिया। फिर मैंने एक तोप में बहुत-सा बारूद ठूंसकर उसमें आग दी। ज़ोर का धड़ाका हुआ, जिसकी आवाज़ टापू के चट्टानी किनारे से टकराकर वापस लौट आई।

अब तक जहाज़ खाड़ी में पहुंच चुका था। वहां से किनारा थोड़ी ही दूर था। लेकिन जहाज़ अब आगे नहीं बढ़ सकता था। तोप की आवाज से पेटरकिन दौड़ता हुआ किनारे की चट्टान पर आ खड़ा हुआ था। कुछ ही देर में जैक भी हाथ में भाला लिए हुए उसके पास आ खड़ा हुआ। मैं जहाज़ की छत पर खड़ा हुआ अपना रूमाल हिलाने लगा और जोर-जोर से उन्हें पुकारने लगा।

"पेटरकिन! जैक! सुनो, यहां मैं हूं! मैं राल्फ।"

अंत में उन लोगों ने मेरी आवाज़ सुन ली। वे खुशी से दौड़ते हुए चट्टान से नीचे उतर आए और किनारे पर पहुंचकर पानी में घुस पड़े। वे चिल्लाते हुए और जोर-जोर से हाथ-पैर फेंकते हुए जहाज़ की ओर बढ़ने लगे।

जब वे दोनों तैरते हुए जहाज़ के पास आ पहुंचे तो मैंने रस्सी की सीढ़ी लटकाकर उन्हें जहाज़ पर चढ़ा लिया। अब हम लोगों की खुशी की सीमा न रही। जैक और पेटरकिन ने मुझको कसकर गले से लगा लिया। मैं भी इतने दिनों बाद अपने साथियों से मिलकर इतना खुश हुआ कि कुछ न पूछो।

इसके बाद हम लोग टापू पर पहुंचे। जैक और पेटरकिन ने झोंपड़ी में अब बहुत-से फल जमा कर रखे थे। कई तरह की मछलियां उन्होंने सुखा रखी थीं और भुने हुए सूअर के गोश्त का ढेर लगा रखा था। खाना खाते समय मैंने उन लोगों को अपना सारा किस्सा सुनाया। मैंने उन्हें बताया कि किस तरह समुद्री डाकू हब्शियों के हाथ मारे गए और किस तरह जहाज़ के उस टापू पर तारारो से मेरी मुलाकात हुई। तारारो अवेतिया को ज़बरदस्ती एक आदमी के साथ ब्याहना चाहता है और अगर अवेतिया ने ब्याह करने से इंकार कर दिया तो उसको सूअर की तरह भूनकर उस आदमी के पास भेज दिया जाएगा।

यह सुनकर जैक की आंखों में खून उतर आया। उसने दांत पीसते हुए कहा, "मैं उस जंगली की खोपड़ी तोड़ डालूंगा। मुझे यही सोचकर बड़ा अफसोस हो रहा है कि मैंने उस दिन उस नीच की जान क्यों बचाई थी!"



मेरी कहानी सुनने के बाद उन लोगों ने अपना हाल बताना शुरू किया। जैक ने बताया कि मेरे जाने के बाद वे लोग काफी देर तक हीरे की गुफा में मेरे लौटने की प्रतीक्षा करते रहे। जब मैं नहीं आया तो सबसे पहले जैक पता लगाने

के लिए निकला। उसने जहाज़ को टापू से दूर जाते देखा। फिर वह पेटरकिन को भी गुफा से बाहर निकाल लाया। गुफा से बाहर निकलने में पेटरकिन को बड़ी दिक्कत हुई। वैसे भी वह तैरना अच्छा नहीं जानता था। जब उसने ऊपर आने के लिए गोता लगाया तो वह बहुत-सा पानी पी गया और गुफा के ऊपर किनारे की तरफ आने के बजाय वह नीचे गहराई में चला गया। किसी तरह जैक उसको बचाकर ऊपर लाया।

इसके बाद वे लोग टापू पर मुझे खोजने लगे। उन्होंने छिपने के सारे स्थान देख डाले, लेकिन कहीं भी मैं नहीं मिला और न कोई मेरी निशानी ही मिली। बहुत निराश होकर वे लोग यही समझ बैठे कि मुझे जरूर ही डाकू उठा ले गए हैं।

इस तरह एक-दूसरे का हाल जानने के बाद जैक बोला, "अच्छा भाई, अब हम लोगों को आगे के बारे में सोचना चाहिए। मेरी तो अभी इच्छा है कि प्रशांत और दक्षिणी सागर के दूसरे द्वीपों की भी यात्रा की जाए। अब तो हम लोगों को एक छोटा-सा जहाज़ भी मिल गया है। हम जहां चाहें जा सकते हैं।"

मैंने और पेटरकिन ने उसकी बात का समर्थन किया। जैक कहने लगा, "हम लोगों को सबसे पहले उस टापू पर चलना चाहिए जहां अवेतिया रहती है। हम लोग चलकर तारारो को मनाएंगे कि वह अवेतिया को उसी आदमी से शादी करने दे, जिससे वह करना चाहती है। अगर वह हमारे किए हुए उपकार को ज़रा भी मानता होगा तो वह हमारी इस मांग को अस्वीकार नहीं करेगा। और अगर वह इंकार करता

है तो हम लोगों का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि हम अवेतिया की मदद करें और उसको उस दुष्ट के चंगुल से छुड़ाएं!"

10

हम लोगों ने यात्रा की तैयारी शुरू कर दी। लकड़ी के एक तख्ते पर तीनों साथियों के नाम खोदे गए—'जैक मार्टिन, राल्फ रोवर, पेटरकिन गे।' फिर उस तख्ते को उस जगह गाड़ दिया गया जहां हमारी झोंपड़ी खड़ी थी। हमने अपनी कुल्हाड़ी, टूटी हुई दूरबीन और अपने दूसरे छोटे-मोटे हथियार इकट्ठे किए और फिर हम अपनी छोटी-सी नाव में बैठकर जहाज़ पर जा पहुंचे। नाव को बाद में जहाज़ पर चढ़ा दिया। लंगर उठाया गया और पालें तान दी गईं। हमारा जहाज़ चल पड़ा।

यहां से मुझे उस द्वीप का रास्ता मालूम था, क्योंकि जब डाकू मुझे उठाकर ले गए थे तो मैं बराबर यही देखता रहा कि जहाज़ किस रास्ते से जा रहा है। इसके अलावा बिल ने मरने से पहले मुझे बताया था कि उस टापू के दक्षिणी किनारे पर एक गांव है, जिसमें कुछ दिन पहले एक ईसाई पादरी आया था। इस पादरी ने उस गांव के मुखिया को ईसाई धर्म स्वीकार करने के लिए राज़ी कर लिया था।

हम लोगों ने इसी ईसाई गांव में लंगर डालने का निश्चय किया। सूरज डूबने से पहले ही हम लोग उस किनारे पर पहुंच गए। कुछ देर में किनारे से एक नाव

जहाज़ की ओर आती हुई दिखाई दी। हम लोग कुछ देर तक उसकी प्रतीक्षा करते रहे।

नाव के पास आने पर हमने रस्सी की सीढ़ी लटका दी। नाव से एक आदमी ऊपर चढ़कर जहाज़ में आया। वह यूरोपीय ढंग के कपड़े पहने हुआ था। उसका रंग गेहुंआ था। आते ही उसने झुककर हम लोगों को सलाम किया और कहा, "आइए महाशय, मांगो गांव में हम लोग आपका स्वागत करते हैं। मैं यहां का ईसाई पादरी हूं।"

जैक बोला, "वाह भाई, तुमसे खूब मुलाकात हुई। आओ, नीचे कमरे में चलो। मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं।" वह आदमी जैक के साथ नीचे चला गया। लगभग आधे घंटे के बाद वे ऊपर आए। फिर पादरी अपनी नाव में बैठकर किनारे पर लौट गया।

जैक ने हम लोगों को बाद में बताया कि इस आदमी से मालूम हुआ है कि अवेतिया अब भी इसी टापू पर है और तारारो ने उसको कैद कर रखा है। अवेतिया ने ईसाई धर्म स्वीकार करने की इच्छा प्रकट की है। लेकिन तारारो उसको मना कर रहा है। जैक कहने लगा, "इस पादरी ने मुझे बताया है कि अवेतिया एक ईसाई सरदार से प्रेम करती है, जो यहां से करीब पचास मील दूर एक छोटे-से टापू पर रहता है। वह उसी टापू में भाग जाना चाहती है। इस तरह हम लोग मौके पर उसकी सहायता के लिए आ पहुंचे हैं।"

जहाज़ को लंगर डालकर वहीं खड़ा कर दिया गया और फिर हम अपनी नाव में बैठकर किनारे पर पहुंचे। वहां

पादरी और उसकी पत्नी ने बड़े प्रेम से हम लोगों का स्वागत किया। वे दोनों वहीं के रहनेवाले थे, लेकिन सभ्य आदमियों की तरह कपड़े पहने थे। गांव के लगभग सौ निवासियों ने भी वहां आकर हम लोगों का स्वागत किया। वे लोग बड़े खुश नजर आ रहे थे और हम लोगों को फल और दूसरी खाने-पीने की चीज़ें भेंट कर रहे थे।

पादरी ने हम लोगों को समझाने की कोशिश की, "आप लोगों को मालूम नहीं है कि यहां के निवासी कितने खूंखार होते हैं। मुझको अवेतिया पर बड़ी दया आती है। लेकिन उसको बचाना असंभव है। इस कोशिश में बहुत मुमकिन है कि आप लोगों को अपनी जान गंवानी पड़े!"

लेकिन हम लोगों ने उसकी बात न मानी और अपने निश्चय पर दृढ़ रहे। पहले तारारो से बात करना चाहते थे। पादरी इस काम में हमारा दुभाषिया बनने के लिए राजी हो गया। जहाज़ को भी हमने इस गांव के किनारे से हटाकर हब्शियों के गांव के किनारे की ओर बढ़ा दिया। जहाज़ पर हमने अपने देश ब्रिटेन का झंडा लगा दिया। पादरी से कहकर कुछ हब्शियों को हमने अपने जहाज़ पर कुछ समय के लिए सहायक के रूप में रख लिया।

दो घंटे बाद ही हमारा जहाज़ उस गांव के किनारे जा पहुंचा। वहां पहुंचते ही हमने सलामी के रूप में एक तोप दागी और लंगर डाल दिया। थोड़ी देर में हम लोगों ने दूरबीन से देखा कि गांव में हड़बड़ी मच गई। ब्रिटेन के झंडे का वैसे ही काफी दबदबा था। कुछ ही देर में किनारे से एक नाव

डरते-डरते जहाज़ की ओर बढ़ने लगी। नाव जब जहाज़ के पास आई तो पादरी ने उनकी बोली में उन लोगों को समझाया कि हम लोग उनके मित्र हैं और उनके सरदार से बातचीत करना चाहते हैं। उसको जल्दी ही जहाज़ पर भेजा जाए। हमारा संदेशा लेकर नाव किनारे की ओर वापस लौट गई।

हम लोग काफी देर तक इंतज़ार करते रहे। इतने में वह नाव फिर से जहाज़ के पास आई। नाववालों ने पादरी को बताया कि तारारो किसी ज़रूरी पूजा-पाठ में लगा है, इसलिए जहाज़ पर नहीं आ सकता। उसने मेहमानों को गांव में आने के लिए निमंत्रित किया है। हम लोग गांव में जाने के लिए राज़ी हो गए।

किनारे पर पहुंचने पर हब्शियों की काफी बड़ी भीड़ ने चिल्लाकर हमारा स्वागत किया। हम लोगों को एक झोंपड़े में ले जाया गया। कई तरह के फल, भुना हुआ गोश्त वगैरह खाने के लिए दिया गया। कुछ देर बाद तारारो वहां आया। उसने आकर पादरी से अपनी भाषा में पूछा कि हम लोग क्या चाहते हैं?

मैंने पादरी से कहा, "इससे कहो कि हमने इसकी और इसके साथियों की और उस लड़की की जान बचाई है। हम चाहते हैं कि यह उस लड़की को छोड़ दे और उसको अपनी इच्छा के अनुसार ईसाई धर्म स्वीकार करने की छूट दे।"

यह सुनकर तारारो बड़ा नाराज़ हुआ। वह न जाने क्या-क्या बकने लगा। पादरी ने हमको उसकी बात का मतलब बताया कि उसे हमारा प्रस्ताव स्वीकार नहीं है।

इतने में हमने देखा कि कई हब्शी अपनी पीठ पर बड़े-बड़े टोकरों में कई तरह के फल और खाने की दूसरी चीज़ें लादे वहां से गुजरे और किनारे पर अपने सामान का ढेर लगाने लगे। हमारे प्रश्न करने पर पादरी ने तारारो से पूछकर बताया कि उसका एक आदमी यहां आया हुआ है। वह अवेतिया को साथ लेकर जाएगा।

थोड़ी देर बाद हमने आश्चर्य से देखा कि कुछ हब्शी एक लड़की को अपने साथ लाए और उसको उन्होंने फल के ढेर पर बैठा दिया। हम लोगों ने फौरन पहचान लिया कि यह अवेतिया ही थी। सारी तैयारी को देखकर पादरी ने जैक के कान में कहा, "भाई, लगता है कि लड़की ने सरदार का ह मानने से इंकार कर दिया है। उसको अभी यहीं बलि च जाएगा। सरदार उसको भूनकर उस आदमी को सौंप देग

यह सुनते ही जैक मारे गुस्से के आग-बबूला उठा। उसने अपने आगे खड़े दो हब्शियों को ध मारकर अलग कर दिया फिर वह लपककर फलों के ढेर पर चढ़कर और अवेतिया का हाथ पकड़कर उसे नीचे खींच लाया। देखते-देखते उसने एक हब्शी के हाथ से गदा छीन ली और जोर से चिल्लाकर कहा, "आओ, देखें, किस-किस में दम है! मैं तुम सबसे अकेले ही निपट लूंगा!"

वहां खड़े सारे हब्शी गदा और भाले लेकर इस तरह जैक की तरफ दौड़ पड़े जैसे उन्होंने उसकी चुनौती स्वीकार कर ली हो, लेकिन तभी पादरी ने आगे बढ़कर कहा, "ठहरो भाइयो, अपने सरदार तारारो के रहते तुम लोग इस मामले

में दखल नहीं दे सकते ! इस समय तारारो ही यह तय करेगा कि इस नौजवान के साथ क्या सलूक किया जाए !"

हब्शियों में एक सिरे से दूसरे सिरे तक शोर उठा और फिर वे लोग पीछे हट गए । उन लोगों ने पादरी की बात मान ली । इस बीच तारारो ने आगे बढ़कर अपने साथियों से कहा, "ठीक है, तुम लोग पीछे हट जाओ । इस लड़के की ज़िंदगी पर मेरा हक है ।" फिर उसने जैक की तरफ घूमकर कहा, "लड़के, तुम अब मेरी मित्रता खो बैठे । अब तुम्हारी आज़ादी और ज़िंदगी मेरे हाथ में है । मेरा कहना मानो और चुपचाप यहां से चले जाओ । तुम अकेले हो और हम सैकड़ों की तादाद में हैं । क्यों बेकार ही अपनी जान गंवाना चाहते हो ?"

पादरी ने उसकी बात जैक को समझा दी । जैक ने गुस्से से कापते हुए जवाब दिया, "दुष्ट ! मैं मर जाऊंगा, लेकिन तुम्हारी जान लेकर ही मरूंगा । मैं तब तक यहां से नहीं जाऊंगा जब तक कि तुम यह वादा नहीं करोगे कि इस लड़की को तंग नहीं किया जाएगा और इसको अपनी इच्छा के अनुसार रहने दिया जाएगा ।"

सरदार ने अकड़ते हुए कहा, "तुम बहादुर हो, लेकिन साथ ही बेवकूफ भी हो ! खैर, अभी तीन दिन तक अवेतिया को यहां से नहीं भेजूंगा । उसको सोचने-विचारने के लिए इतना समय और दिया जाएगा ।"

पादरी ने जैक को समझाया कि इसकी बात मान लेनी चाहिए, वरना व्यर्थ ही जान गंवानी पड़ेगी । तीन दिन में हम लोग कोई दूसरी तरकीब निकाल सकते हैं । फिर उसने



सरदार की नजर बचाकर अवेतिया के कान में धीरे-से कुछ कहा । जैक ने उसकी बात मान ली और गदा फेंक दी । तारारो यह देखकर कुछ खुश हुआ । फिर आगे आकर उसने अवेतिया का हाथ पकड़ लिया और उसको गांव की तरफ ले चला । इधर हम लोग भी पादरी को साथ लेकर वापस अपने जहाज़ में लौट गए ।

11

जहाज़ पर पहुंचकर हम लोग नीचे कमरे में इकट्ठे हुए और स्थिति पर विचार करने लगे। हम तीनों बड़े गुस्से में थे और फौरन ही कुछ-न-कुछ कर डालना चाहते थे। लेकिन पादरी ने कहा, "देखो भाई, इस तरह गुस्से में कुछ कर बैठने से काम नहीं चलेगा। मैंने एक योजना बना रखी है। उसमें खतरा जरूर है, लेकिन उसके अलावा और कोई चारा नहीं है। देखो, यहां से पचास मील दक्षिण में एक टापू है जहां के हब्शी निवासियों ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया है। करीब दो साल से वे लोग ईसाई हैं। उनका सबसे बड़ा सरदार अवेतिया का प्रेमी है। अगर हम लोग किसी तरह अवेतिया को वहां पहुंचा दें तो फिर तारारो उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा।"

पादरी ने कुछ रुककर आगे कहा, "हम लोग किसी तरह अवेतिया को छुड़ा लें। उसके बाद तुम उसको एक नाव में बैठाकर उस ईसाई टापू में पहुंचा आना। लेकिन अपने जहाज़ को तुम यहीं खड़ा रहने देना ताकि तारारो और उसके साथियों को यह भ्रम न हो कि तुम लोग अवेतिया को लेकर भाग गए। वह इसी टापू पर कुछ दिनों तक अवेतिया की खोज करता रहेगा।"

जैक ने कहा, "लेकिन हम लोग अवेतिया को पाएंगे कैसे? उसको तो तारारो ने कैद कर रखा है।"



पादरी बोला, "हां, कैद किया है, लेकिन बांधकर नहीं रखा। मैंने अवेतिया को धीरे-से कह दिया है कि वह आज रात को एक खास जगह पर हम लोगों को मिलेगी। मैं तुम लोगों को वहीं पहुंचा दूंगा। वह बड़ी आसानी से उस झोंपड़ी से भाग आएगी, क्योंकि उसके पहरेदार सोचते हैं कि उसके लिए इस टापू से भाग निकलना असंभव है।"

रात में हम लोगों ने अपनी नाव ली और चुपके-चुपके उसको खेते हुए किनारे की एक सुनसान जगह की ओर बढ़ चले। पादरी हमारे साथ था। किनारे के पास पहुंचकर उसने धीरे-से समुद्री चिड़िया जैसी आवाज़ की। उसकी आवाज़ को सुनकर झाड़ियों में कुछ सरसराहट हुई और थोड़ी देर में अवेतिया बाहर निकल आई।

पादरी ने आगे बढ़कर अवेतिया को नाव में चढ़ा लिया। फिर उसने उसको हमारी योजना समझाई। यह जानकर अवेतिया बड़ी खुश हुई कि हम लोग उसको बचाने के लिए आए हैं और उसको उसके प्रेमी के पास पहुंचाना चाहते हैं। नाव में हमने काफी सामान रख लिया था। पादरी वहीं किनारे पर उतर गया और हम लोगों ने अपनी नाव आगे बढ़ाई।

हमें लगभग पचास मील की दूरी तय करनी थी। हम रात ही रात इस टापू से निकल जाना चाहते थे। सब लोग जोर लगाकर नाव खे रहे थे। कुछ ही देर में हम काफी दूर निकल गए। रात-भर हमने सांस नहीं ली।

धीरे-धीरे पौ फटी और सवेरा होने लगा। अचानक

पेटरकिन भयभीत होकर चिल्ला उठा। उसने पूरब की ओर इशारा किया। हम लोगों ने जो दृश्य देखा उसको देखकर हम सभी थोड़ी देर के लिए सन्न रह गए। हब्शियों की एक बहुत बड़ी नाव, जो युद्ध के समय ही निकाली जाती थी, तेज़ी से हमारा पीछा कर रही थी। अभी नाव काफी दूर थी, लेकिन घबराहट के मारे हमारी हिम्मत टूटने लगी।

हम लोग नाव को तेज़ी से भगाने की भरसक कोशिश कर रहे थे, लेकिन हम सिर्फ तीन ही आदमी थे और उधर हब्शियों की नाव में न जाने कितने आदमी बैठे थे और सब तेजी से नाव खे रहे थे।

लगभग दो घंटे में हब्शियों की वह बड़ी भारी नाव हमारे बिल्कुल पास आ गई। आते ही उसने हमारी नाव को ज़ोर का एक धक्का दिया। हमारी नाव उलट गई और हम लोग पानी में आ गिरे।

पानी में गिरने पर मैं अपने को संभाल नहीं सका और बहुत-सा पानी पी गया। इसका नतीजा यह हुआ कि मेरे हाथ-पांव सुन्न हो गए और थोड़ी ही देर में मैं बेहोश हो गया।

जब मुझे होश आया तो मैंने देखा कि जैक और पेटरकिन के साथ हब्शियों की नाव में बंधा पड़ा हूं। हम लोगों के हाथ-पांव कसकर बांध दिए गए थे। करीब दिन-भर हम लोग इसी तरह पड़े रहे और हब्शी जोर-जोर से चिल्लाकर अपनी नाव खेते रहे। अंत में हम उसी टापू पर आ पहुंचे, जहां से भागे थे। अवेतिया को उन लोगों ने अपने पास ही नाव के एक कोने में बैठा रखा था, लेकिन

उसके हाथ-पांव नहीं बांधे गए थे।

हमें घसीटकर किनारे पर उतारा गया। फिर वे लोग हमें धकेलते हुए तारारो के झोंपड़े की ओर ले चले। तारारो गुस्से में भरा वहीं बैठा था। हमारा मित्र पादरी भी उसके पास चुपचाप खड़ा था और बहुत परेशान नजर आ रहा था।

तारारो ने हुक्म दिया कि तीनों को मार डाला जाए। उसका हुक्म पाते ही उसके साथियों ने हमें कसकर पकड़ लिया और घसीटते हुए जंगल की तरफ ले चले। जंगल में लाकर उन्होंने एक पहाड़ी गुफा में हमें बंद कर दिया और बाहर से एक बड़ा भारी पत्थर लगा दिया। गुफा में घना अंधेरा था।

हमारे हाथ अब भी पीछे कसकर बंधे थे। हम लोगों की समझ में नहीं आ रहा था कि अब आगे क्या किया जाए और किस तरह अपनी जान बचाई जाए। हम लोगों को अब भी थोड़ी आशा थी कि पादरी हमारे लिए कुछ न कुछ तो जरूर करेगा। हमें ईश्वर की शक्ति में भरोसा था। हमने अवेतिया को इन लोगों के चंगुल से छुड़ाने की कोशिश करके अच्छा काम किया था और ईश्वर अच्छे काम का कभी भी बुरा फल नहीं देता।

कुछ देर बाद गुफा का पत्थर हटा और तीन हब्शी अंदर घुसे। उन लोगों ने खींचकर हमें गुफा से बाहर निकाला और धकेलते हुए जंगल की तरफ ले चले। हम लोगों ने सुना कि दूर ढोल और नगाड़े बज रहे थे और लोगों के ज़ोर-ज़ोर से कहीं चीखने-चिल्लाने की आवाज़ें

आ रही थीं। पहले तो हम लोगों ने सोचा कि शायद फिर से हमें तारारो के पास ले जाया जा रहा है। लेकिन यह हमारा भ्रम था। ढोल और नगाड़ों की आवाज बढ़ती जा रही थी। हमें एक मंदिर के सामने लाकर खड़ा कर दिया गया। वहां जंगलियों की काफी भीड़ जमा थी। वे लोग अपने भाले हवा में उछाल-उछालकर नाच रहे थे। हम लोग समझ गए कि अब हमें बलि चढ़ाया जाएगा। हमने देखा कि पादरी भी भीड़ में एक तरफ चुपचाप खड़ा था।

लेकिन अचानक बड़ी तेज़ हवा चलने लगी और ज़ोर की आंधी आ गई। कुछ ही देर में आसमान में घने बादल छा गए। बिजली कड़कने लगी। देखते-देखते मूसलाधार पानी बरसने लगा। तूफान के आते ही हब्शियों में भगदड़ मच गई। वे लोग अपने-अपने झोंपड़े बचाने के लिए वहां से भाग निकले! पानी अब जोरों से बरसने लगा था।

पादरी ने मौका देखकर अपनी जेब से एक चाकू निकाला और हमारे हाथ की रस्सियां काट दीं। वह बोला, "ईश्वर की बड़ी कृपा है! तुम लोगों को भागने का फिर मौका मिला! चलो, हम लोग पास ही किसी गुफा में छिप जाएं!"

हम लोगों ने एक क्षण की भी देरी नहीं की। तुरंत पादरी के साथ वहां से भाग निकले। कुछ देर तक हम एक चट्टान की छाया में खड़े रहे। लगभग आधे घंटे के बाद तूफान का वेग कुछ कम हुआ। हम लोग पादरी के साथ भागते हुए ईसाई गांव की ओर बढ़ने लगे। रास्ते में हम लोगों ने देखा कि तूफान सचमुच बड़ा भयानक था। कई

झोंपड़ों के छप्पर उड़ गए थे और मिट्टी की बनी कच्ची दीवारें ढह गई थीं। सब लोग अपना-अपना सामान बचाने में लगे हुए थे। किसी ने हमारी तरफ ध्यान नहीं दिया।

लेकिन ईसाई गांव अभी यहां से कई मील की दूरी पर था। ऐसे आंधी-तूफान में अब आगे बढ़ना संभव नहीं था। अंत में मजबूर होकर हम लोगों को एक गुफा में शरण लेनी पड़ी।

कुछ देर में तूफान बिल्कुल बंद हो गया और हम लोग फिर से गुफा से निकलकर भागने लगे। लेकिन अब जंगलियों को भी मौका मिल गया था और वे लोग हमें ढूंढ़ने के लिए चारों तरफ फैल गए थे। दुर्भाग्य से एक आदमी की नज़र हम पर पड़ गई। वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर अपने साथियों को पुकारने लगा। जैक ने एक मोटी-सी डाल उठाकर उसके सिर पर दे मारी। वह तो वहीं ढेर हो गया, लेकिन तब तक उसके कुछ साथी वहां आ पहुंचे। उन लोगों ने तुरंत हमें पकड़ लिया। इस तरह हम लोग फिर से अपने दुश्मनों के चंगुल में फंस गए।

इस बार हमें बड़ी बेरहमी से पीटा गया और पीटते-पीटते उसी गुफा में लाकर बंद कर दिया गया।

12

इसके बाद की कहानी बड़ी दुःख-भरी है। हब्शी हम लोगों को मारने से पहले खूब सताना चाहते थे। उन लोगों ने

लगभग एक महीने तक हमें उसी गुफा में बंद रखा। दिन-भर हम लोग उसी में बंद रहते थे और शाम को थोड़ा-सा खाना गुफा में फेंक दिया जाता था। हम लोग सोचते थे कि इस नरक से तो मौत ही भली है। जितनी जल्दी ये लोग मार डालें उतना ही अच्छा। लेकिन न जाने क्यों हम लोगों को मारा नहीं गया।

एक दिन सवेरे अचानक गुफा का मुंह खुला और एक आदमी ने आगे बढ़कर हमारे हाथों में बंधी रस्सियों को काट दिया। फिर हमें गुफा से बाहर निकलने का इशारा किया। मैंने सोचा कि अब हमारा अंत समय निकट आ गया है।

लेकिन बाहर निकलने पर मुझे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। बाहर एक पेड़ की छांव में पादरी खड़ा हुआ था। हमें देखते ही वह मुस्कराता हुआ आगे बढ़ा। उसने जैक को अपने गले लगा लिया और कहा, "मेरे नौजवान दोस्तो, ईश्वर को धन्यवाद दो कि उसने तुम्हारी जान बचा ली! तारारो के हुक्म से तुम लोगों को आज़ाद कर दिया गया है। अब तुम लोग बिल्कुल स्वतंत्र हो।"

हम लोगों के आश्चर्य की सीमा न रही। मैंने पादरी से कहा, "आखिर यह मामला क्या है? जरा समझाकर हम लोगों को बताओ।"

वह बोला, "बात यह है भाई, कि इस बीच मैं बराबर तारारो से मिलता रहता था और उसको ईसाई धर्म के बारे में समझाता रहता था। ईश्वर की न जाने क्या कृपा हुई कि मेरी बात का उस पर असर हो गया और अंत में वह ईसाई धर्म को

आदर की दृष्टि से देखने लगा। इसके बाद तो कुछ पूछो मत। उसका सारे का सारा गांव ईसाई धर्म की अच्छाइयों से प्रभावित हो गया। उन लोगों ने कसम खाई कि अब आगे से कभी भी किसी मनुष्य का बलिदान नहीं करेंगे। अच्छा चलो, ये लोग तुम्हें तारारो के पास ले जाने के लिए आए हैं।"

हम लोग खुशी-खुशी उनके साथ चल दिए। रास्ते में जितने भी लोग मिले सबने हंसते हुए हमारा स्वागत किया और हमसे हाथ मिलाया। हमें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। जो लोग इतने खूंखार थे और हमारी जान के ग्राहक हो गए थे, वे आज मित्रों की तरह हमारे गले मिल रहे थे।

तारारो के घर के सामने हब्शी निवासियों की काफी बड़ी भीड़ जमा थी। तारारो ने आगे बढ़कर बड़े उत्साह से हम लोगों से हाथ मिलाया। तभी भीड़ में से एक अंग्रेज़ पादरी हम लोगों की तरफ आता हुआ दिखाई दिया। वह हाल में ही इस टापू पर ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए आया था। वह हम लोगों से मिलकर बड़ा खुश हुआ और बोला, "तुम्हारे और मेरे मित्र इस हब्शी पादरी ने मुझे तुम लोगों का पूरा इतिहास बताया है। ईश्वर को धन्यवाद दो कि मैं मौके से यहां आ गया।"

हम लोगों ने देखा कि झोंपड़ी के पास ही एक मैदान में आग जल रही थी और हब्शियों के झुंड के झुंड अपने देवताओं की लकड़ी की मूर्तियां ला रहे थे और उन्हें आग में झोंक रहे थे।



इसके बाद हमारे मित्र पादरी ने हमसे कहा, "तुम लोग अवेतिया के बारे में जानने के लिए भी बहुत उत्सुक होगे? आओ, तुम्हें मैं उससे मिलाता हूं!" यह कहकर वह हमें

लोगों की भीड़ में से निकालते हुए दूसरी तरफ ले चला। वहां अवेतिया एक सुंदर-से काले हब्शी नौजवान के पास खड़ी थी। पादरी ने बताया कि यही उसका प्रेमी है। तारारो ने इसके साथ अवेतिया का विवाह करना स्वीकार कर लिया है। पादरी ने उस नौजवान से हम लोगों का परिचय कराया। वह हमसे मिलकर बड़ा खुश हुआ और बार-बार झुककर हम लोगों को नमस्कार करने लगा। अवेतिया भी बड़ी खुश नजर आ रही थी।

एक दिन और हम लोग तारारो के मेहमान की तरह उस टापू में रहे। इस बीच अंग्रेज़ पादरी ने हम लोगों को काफी बातें बतायीं और वहां से इंग्लैंड लौटने का रास्ता भी बताया। तारारो और अवेतिया के प्रेमी ने हमारे जहाज़ को तरह-तरह की खाने-पीने की चीजों से भर दिया। फिर सबने मिलकर धूम-धाम से हमें विदा किया। जिस ईसाई सरदार के साथ अवेतिया का विवाह होने लगा था उसने अपने तीन आदमियों को कुछ दूर तक यात्रा में हमें सहायता पहुंचाने के लिए हमारे साथ कर दिया।

ये लोग अफ्रीका की एक बंदरगाह तक हमारे साथ रहे और वहां से वापस लौट गए। वहां हमें कुछ दूसरे जहाज़ी भी मिल गए, जिन्होंने जहाज़ का काम संभाल लिया। कुछ ही दिनों में हम इंग्लैंड पहुंच गए।

इसी तरह हमारी यह रोमांचकारी यात्रा समाप्त हुई। अब भी मुझे मूंगे का द्वीप बार-बार याद आता है।

•••

किशोरों के लिए उपन्यास

गुलिवर की यात्राएं (Gulliver's Travels) (पुरस्कृत)
रॉबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe) (पुरस्कृत)
ख़ज़ाने की खोज में (Treasure Island) (पुरस्कृत)
चांदी का बटन (Kidnapped)
कठपुतला (Pinnochio) (पुरस्कृत)
वीर सिपाही (Ivanhoe)
चमत्कारी ताबीज़ (Talisman)
तीसमार ख़ां (Don Quixote)
तीन तिलंगे (Three Musketeers)
क़ैदी की करामात (Count of Monte Christo)
डेविड कॉपरफील्ड (David Copperfield)
बर्फ़ की रानी (Anderson's Fairy Tales)
रॉबिनहुड (Robinhood)
जादू का दीपक (Stories from Arabian Nights)
अस्सी दिन में दुनिया की सैर (Around the World in 80 Days)
जादूनगरी (Alice in Wonderland)
मूंगे का द्वीप (Coral Island)
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)
परियों की कहानियां (Grimm's Fairy Tales)
सिंदबाद की सात यात्राएं (The Seven Voyages of Sindbad)
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)
मोबी डिक (Moby Dick)
जंगल की कहानी (Call of the Wild)
काला घोड़ा (Black Beauty)
अद्भुत द्वीप (Swiss Family Robinson)
काला फूल (Black Tulip)
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्राएं (20,000 Leagues Under the Sea)

ISBN 81-7483-020-0
9 788174 830203

शिक्षा भारती